बगड़ावत (राजस्थानी लोक-गाथा 5704)

लीपी - मूल्य आदि १४ रु० ८ आ०.

२३।६।५६.

091.954
R142 BG

48578

CIA

हाली संवारे बालदी न संवारे गायाँ तणो गुवाल
बेटो जाट को यजो संवारे गणपत, उगतड़े पर बात।
धोला धोरया के देव मोत्या - - - - - -नमण करूँ पृथ्वीनाथजी।
नमण करूँ तैंतीस क्रोड़ देव नमण करूँ एक माता धणारी

- - - - - - - - -

- - - - - - - -

धन धन ओ माता धरतरी थामें गया नर तो - - - - -
नीलो खुरो घोड़लो, महदी वरण केस
दंत देवल वरण केवल वरणा कान।
नरसिंह माल नर मल, घट में बोले बैकुंठ को नाथ।
आतरा की बेल्याँ थानै याद किया,
तो पहलाद जी नो बलती होल्याँ - - - - - - उबारा
हरणकुश ने मारया।
नमण करूँ पृथ्वी नाथ जी तैंतीस करोड़ देव
पेल नाम परमात्मा का लेवा रामा धणी का लेवां नाम
पलीया की धरती मे राम देव वीर प्रकट्या।

- - - - - - - -

सैंस घोड़ा सैंस पालख्यां कुड़लातपे कुल का - -
तीन पग घोड़ा का धरतरी परो चौथो - - - - आसमान
चोथो पग धरती टकेलो पृथ्वी परले जाय।

बगड़ावत

(राजस्थानी लोक — कथा काव्य)
सं. पुरुषोत्तम मेनारिया

पैला ही कणी देवजे सिंवरजौं, और कुणी का लीजे नाम
पेली अण गड़ देव ने सिंवरूं और गणपत का लीजे नाम
मेन्दू मजनां गावजो, मूला भांगड़े रवाना
दे माली डूंगरा देव पधारया माथे झालरिया टोप।
हजूर अली वेरा में कर दो वास।
अणी ईंट में बेला हजूरका देवरा।
अणी ईंट में ऊदो राणा बरा जेला।
अणी ईंट में नकलिंग देव छोछू भाट करे पूछना
किने बगस गया धजा धोवल्या किण ने बगस गया सेलुवास ढोर
बालो ठाकर बगस गयो बांया हाथ की मूदड़ी जींके हीरा जड़्या नग चार
माता पिता गुरुदेव आपण घट में बोले वै कुणबी के नाथ
सारदा ब्रह्मा की डीकरी हंस बैठी बजावे वीण।
खाती संवरे खतोड़ में एरण धमतो लुवार।
बेटो रजपूतको आपनै सँवरे—
तो उगतड़े परभात, नीली पारवर माण्डे झूला
बेटो महाजन को संवरे बजारौं मांडतो हाट बणज करतो वोपार
बेटो ब्राह्मण को संवरे जूना वाचे वे वेद चार।

— — — — — — —

बेटो गाडरी गूजर को सँवरे उगतड़े पर बात।
दुंदाला दुरव बांदणा धने तो गहरी संपाते - - - - -

नमण करूं एक बदनोरा की चांवड़ी।
साड़े मंदारचे संकरी बाजी भरवत बैठी मेवाड़।
देवी काला का कले वराडे बाके कल्ले बैरार।
नौनेजा खड़ा कीता रण राठोड़ा री पाल।
दसवो नेजो खड़ो करती तो पृथ्वी परले जाय।
माजी म्हारी बेठण धारया बैठी बेर खेत की पाल।
ऊबा बाल वया आरज करे, कीने टूटगी कड़ा मूंदड़ा —
कीनो टूटगी आकड़दे न चार
खारी का भोग्या नै भोम टूटगी ज्यूं टूटै नेजाणी सारी संसार
पुत्र लेड माता गुवागणी का गेवर सरीखा पूत
सेख्या में सूड करलावता, फर पारवरिया पर झूल।
देखो देव को कालो व गोरो सत आयो काडे डाव,ण वभूत-
गई न बावडे खूं खू।
धन धन रे भैरू काला बॉम्ह हिलावे पालणो,
खपर में खावे, मसाना में लौटे भैरू काला की पूजा कुण मेटे।
चत्रभुज जी चोड़ले वराज्या देवरा नाम में शुद्ध होईरा गणी जावे
भोपा सौ थरपे तो भोपा की खोड़ भोपानै खावे।
भड़ नियनै जाव जो और जोधा का लीजो नाम।
भरत माण्ड्यो बाग के झूर में तो सूरमां रक्ता सूं - - - -
कुर खेतां में बगड़ावतां की महासत्यां

बिराजमान वे रही।

हजूर देव नारायण के आजगर का बैठणा।

गलो बिलमरिया तारवा राजकुमार

हजूर का हाथ में कंवल को फूल को डेडार।

चांद सूरज तो तपे, मोर करे विलाप

हजूर ने बरदावे छोटू भाट।

भैरव बजावे पीजरो बड़दावे छोटू भाट।

छोटू भाट ऊदल जी की बरदावली करे

ऊदल जी, मरदूजी, सुणो जी ना मौगी जी।

मदन जी, पाँच ही भायों की अमर वेगी जोड़।

देवी तो म्हाकी मोरी, मैं देवी का गुणदार।

जरली खोल देना विद्या तणा भंडार।

भेरू की टेक, बना की टेक राख जो बैकुण्ठ का नाथ

राखेला भदेसर को श्याम।

" बगड़ावत शुरू"

सबसे देवी शारदा, नामण करू गणेश।

पाँच देव रक्षा करे, ब्रह्मा, विष्णु महेश॥

लेना हरका जी नाम, थर बावे भोजा ने भाव गावणा

लेवा भोज का नाम, भोजो दातारौँ के सेवरो

मतवाला का मोड़ " " " "

ऊँच बदाले देवरा, सोनारा कलश चढ़ाय।
सोना नो काटो तोलणी, रुपा नो लेवो ताप।
रूप उधारो ना मले, मरया नो जीवो होय।
मरजाणो संसार में, कईय ना आवे लार
खावो नो खुवाया करो, करो जीवरा लाड़।
जीवरा सरीरवा पांवणा, मले ना दूजी बार।
चुणियोड़ा देवल ढस पड़े उन म्योड़ा नर मरजाय।
कई यन आवे लार,
काचा घड़ा नरजना पूतला, काची मरदों की देही
असी चूड़ी काचकी, फूटी ना फाटी को होय।
उगोड़ा सूरज आँथसी, फल्योड़ा कम लाय॥
परबाते भोजने गावणा, भोजका लेवां नाम।
भोजो सोनो बॉटे रेगलवो, चाँदी की गजा ठाट
धजा बाँटे धोवल्या, सलुवारी गाय।
गूरवा ने भोजन देवे, गढ़ पत्या ने गाँव
उगन्याड़े की जो परबात।
पेस्या वाटे बारवड़ी, लवारी गाय।
लेणा देव का नाम, परबाते भोजने गावणा।
लीजो देवका नाम, परबाते भोजने गावणा॥

"जंन्म पत्री"

आदन सिंह जी, बदन सिंह जी, लदन सिंह जी
गोपाल सिंह जी, हनिसिंह जी, मांडसिंह जी
नागोर सिंह जी, बाग सिंहजी नीलो सोवड़ी बाई
मांडु सिंहजी बाबू जात का रजपूत खाली ओम
खावे, गरद के पहरे कोई काम देवे!
मह चोबीसी माई बेठा जाजम डाल।
घर बदनोरा के ढाल।
कई हमलो करो।
जियाजी थू तो गॉवका केरड़ी में हालजा
मोना जी थू हालजा गॉव की गाया में
चरती हला चढी डुगरी
गाय चरतां गुरु मिला।
मल्या शंकर नाथ।
मल्या दीना नाथ।
नागवाड़ का डुगरा, बाबेजी माडी डीब की।
कटोरा दूध पिलाय, गाय चराना।
मोजने डुगरासूं सुगरो कियो, धरयो माथे हाथ।
खाजो पीजो चेला नाथ का करजो द्वापर उमर।
अंगा पर अंगरखी पेरो मती।
चरती गायने बताओ मती।

ब्राह्मण की गाय की गुवाली लो गली।
पग में पगरखी पहरो गली।
आतरा नेम थे ठाव लीजो। तो छटे महीने थारे ईश्वर पावणो
होवेगा। आतरा आतरा नेम ठाव लीजो।
भोज चरावे ब्राह्मण की गाय।
दनां महेश्वा गावतरी गुरु माराज की धूणी पर परी जावे।
गुरु माराज दुह लेवे। के ब्राह्मणी ओलंबो देवे
आह मारी गाय की गुवाली ना लेवे
छोरा छोरयाँ के पासी देवे।
भोज चरावा में कीका नाम लेवां।
आयन्दा सूँ थारी गाय की नंगो राखजो
माथा के कालो बोड़ो बांध दीजो।
सब गायांने गाँव में जाती छोड़ दीदी
या माराज अणी गाय के लारे लागा।
गावतरी ने माड़ा वेगिया। बाबोजी जोवे वाट
वांटा की कूड़ी हाथ में मोड़ी आई माता गायतरी
बापू ने मेहलदो वहरी उपरे, रेणने आवे नार।
बापू ने मारवा उपरे या भोग आपणे आजोवेला
बापू ने मेल्या पेरा उपरे, रेण में आयो नाहर।
बापू नार के फटकार माथो तोड़ नाख्यो नार खावे

गाय तो पाप बरोबर लागे पाप आगे कटे घूंटा
सो महादेव शंकर का घाट में नाहर का माथा ने बुआ
देवा नीला हेवर पर लिया डारावार हाथ में
लीदो नाहर को माथो। आगे नीला सवेड़ी बाई
शव महादेव का घाट पर सांपड़री नर नाम को
उणियारो ना देरवे। के वाजी घोड़ा की
खुरताल मूड़ो आयो नार को नजर।
धड़ आयो आदमी को तो वही द्रव्य
लोचन पड़ गयो। नासे महिने बागजी बापू
पैदा किया मूड़ो तो नाहर को धड़ डारवो आदमी
को। वाको मन होवे तो नगर में बमें मना में
कपट होवे तो मारे होंकार
छोरा छोरया ने छड़े लाव
वणा की मोंवा नवके आय के।
मॉं — कटे बेटा
छोरा — मां का मेलो स्यो।
मॉं होना हो बापू साकी शकल नार की
राजा जी सा के जावगा लागो।
के तो नगर ने रारवां के बापू ने रारवो।
नगर जावेगा तो आनन बना दुरवी होवां गा।

बापू सा जावेगा तो और देखेगा देवरा को धणी
बापू ने देश निकालो देई दो।
बापू सा सुरवा बाग में डेरा दे दीदी
सुरवा बांगा का हरिया वे गिया।
के आया तीज तिवांरा का दिन।
के नगर की सहेलियां भेली वेवा लागी।
चालो बांयाँ कोटर मण्डे हीदो हीदवा चलाँ
वटे अणा छोरया के हिन्दो हाथे आयो नहीं
तोधा की छोरी मे बधी घणी मारी।
चालो छोरया बागजी बापू बागाँ में हिंदा हिदरिया
वणाने हेलो पाड़यो, बापू आपका हींदा पर माने हीन्द
वादो।—
बागजी— छोरयां अस्या काम करो। सात सात
फेरा मारा ओल्यू दोल्यूं फरती जावो हिन्दा हीदतीजावो
वणा अस्यान ही कीदो छोरया जवान छेवेगी सावा
सुलजावे पता अणा का सावा ने सुजे क्यूके बागजी
दोला फेरा झूलागई। डूं ये कुल जला वला बायारी
यजी आप हो जावे नहीं सो बागजी ने सौंप आवो।
के बायाँ ने भेली कर बाग जी ने लेजा सौंपी आपके
राखो मारे नहीं छावे। आपकी आपके राखो।

आतरी ने कटे रवटावू।
के देवरा वाला को लीदो नाम। के बन्य मरी
तेरा जपी बाग़ा जी की बाप मे आई एक ब्राह्मणनेददीही
एक एक के दो बेटा पैदा किया।
मह चौबीस भाई।
नियोजी, भोजोजी, तेजोजी, बाहरावजी, भागोर राव
जी, मॉड़ल रावजी, नेतो जी, अदन सिंह जी, बदन
सिंहजी, मदना सिंह जी, सहन सिंग जी, जैपाल सिंग-जी,
हरि सिंग जी, मॉडू सिंह जी, सूपजी, मूणो जी भागी जी,
जोधो जी, गंगमाल जी, उद सीग जी, जोर सिंह जी,
जीवन सिंह जी, नाथू सिंह जी।
मोड़ी आई माता गावतरी कटे लगाई आतरी बार।
धीरे बोलो चेला नायका धणा डूंगरी दौड़गी।
रावत भोज मारी लार।
हिया मे होल्या बले। मारे उठे जाल।
ले लोट्यो ठण्डी करो जोगड़ी, मारे दूणी लागी जाल।
ब्राह्मण की गाय चूकता धरम खेल मे जाय
फेर दलड़ा की बात, अरमो आजा चेला बाथ का
थारे आसी धमेड़ी थाप की।
थने मेलू तेरवी पियाल।

ले लूं लूगत तोड़। धन भोजो जी म्हारो नाम।
आरमों आजे चेला नाथ का।
हियाने हट कर राख जो, दल ने राखजे पोटाप।
खुना चाटीना गाला ज्वार का बूबला,
खांदा पर काली कमली जीमे लीदा जुवार का बूबला,
चढ़ता डूंगर पर सूं उतरया।
कांकड़ में आज मतो उपायो।
ये ब्राह्मण की गुवाली का सो आपतो कायात लाग णो।
खाने झाड़ी में फेंक दीदा। खादा पा काम की
जीमे थोड़ा रह गया। धार में कामला नो लाकर टेर
गांयाँ गेरयां की दुवारी करवा लाग गया।
सत के मारयो हीरा को ब्राह्म झूल गिया।
नियोंजी माता गयाणी आई नाले तो आरवी मोरां
कंय की वे रही।
तो फेर रावत भोजाने कई समाचार देवे।
बाग जी के पेट में खोटो क्यु जन्मो रे बाग जी का
सूरो
को दवाई सरदारों कुल में गाल
जाती जाजां कटे लूटी कटे दीदो बेती
नादियां ने थोब।
कटे तोड़ी ऊंटा बेती कतार।

कढे लूटी रे थे आड़े मारग जाती जान।
कटूं लायो रे नरवराली बिनणी को गैणो खोल।
कटूं लायो लाखा वणा।
बागजी का पेट मे खोटो न जन्मो।
न टुबाई सरदारों कुल वाला कुल मे गाल।
जाती ड़ी जाजान्नी लूटी, न लेग्यो बेती नदी पाते थोन
न तोड़ी ऊंटा बेती कतार, न लूटी आड़े मारगजातीजान
न लायो लखावणा उजार को धन माल।
एक नाठावाड़ का डुंगरा लाये रूप नाम जोगेड़ा।
खणचा बोन गाल्या, ज्वार का बूबला।
दाणो घर में लायो नहीं, सत को मारग सत को
प्रकाश डूत गियो तो खबर कोई नो।
भोजा की माँ दुवारा गूजरी।
माजी मारी करदे नो भोजन की थाल तियार।
मैं जावा जोगी वाले द्वार।
अठे भोजन की थाल ले जोधो निकल्यो।
गुफा छोड़ बारे आवो गुरु दियाल।
भोजन लायो जो आपने आरोगणो पड़ी।
चेला रे चेला थूं है नुगरो थारा हाथ को
अन जल पाणी नहीं लेवां।

नुगरा को सुगरो करो, धरो शीश पर हाथ।
सवा सौ मण को है कड़ाव, सवा सौ मण पुरां तैल।
एक सपड़ो करां अब महादेव शंकर क घाट।
दूजो सपाड़ो करां कुल कलता तेल के माय।
गुरु महाराज शंकर के घाट सपोड़ो करवा गया कूंचां।
को गुम को अठे रह गया। निपोजी विचार किदा के
गुरु जी पाछा आवेगा ता कई मांगा गा।
के कूचा के ओवरा का ताला खोलवा लागा।
पेली का ओवरा को तालो खोल्यो तो।
डाय बंगला को हाथी बंधो देख्यो।
दूजा ओवरा में घोड़ी बुली बंधी देखी।
तीजो को
चोथा ओवरा मे बिडालो खड़क देखो।
पांचवां ओवरा मे देखो (खोपड़ी) हंस रही।
धड़ा लड़ रही। वे बोली बेटा मारा आवावालो है
थु भी मां का मेलो।
आतरा मे गुरु महाराज संपाड़ो कर पछा आया।
नियारे मण्डी का ताला क्यु खोल्या।
नियारे कई काम अन्दाता मैं नी खोल्याजो हलो।
तैल उबालबा के मेला गया जो करिया हूं।

गु. बेटा नुगरा यूं माया नी मले।
गु. गा. गुरुदेव की आण चेला तैल दोलू फेरा फरा
गुरुदेव की आणरे नुगरा नो माया नी मले।
सुगरो वेन लेजाय रे नुगरा नो माया नी मले।
अब आगे नियाजी पाछे निया गुरु मारात्र।
नो नियाजी ने पकड़ कड़ाव में नाकवा ढुका।
नियाजी नेक थी मेरू डांग कड़ा के दोई नाक में रोप
अठी नू बठी न जा ऊबा रिया।
चेला रे चेला पलेरो सबला फरा सबलो नो।
सबलो मारी छात तो मदेरयो ठाल दीदी।
आप वे जावो आगे और मूं वे जाऊ पाछे।
असी घमेडू कान। सूटी मदरा ले लूंगा तोड़ी।
नियोजी गुरु माराजाने पकड़ा कम मूं कड़ा मे
पदरा दीदा नो सवा करोड़ को पोरसोले नियोजी निकले।
मायां की कचोड़ी मेली बी रही।
नियाजी कई बात बी। यू गुरु माराजने मार सवा
करोड़ को पोरसो ले आयो।
बेटा रे नुगरा खोटो काम करना क्यों।
पूतारो णो अहंकार एक दिन फोलो राम को।
घर घर की पनिहारे सूमा नो डंडे मारवले।

गुरु देव की आण बांका मत चालो लगड़ावतां।
बांका सूँ अंतली खोड़ देवर बांका रा टेढ़ो मिले।
काड़ा बांक मरोड़, भामी बांका २ में धरा।
गुरु देव की आण भाबी बांका २ मे करा।
मनि आदर भाव भाबी वन मे बांकी लाकड़ी।
जिने काट सके नर कोय बांकी वन मे लाकड़ी।
गुरु देव की आण भाबी संणगा बांधा झूपड़ा।
दुनिया में आधी चार भाबी संणगा बांधा झूंपड़ा।
गहरो डीगो हाथ भाबी काढो खाय णलिये घरां।
कई करे करतार. फलां मे नागर पेलड़ी।
धायो चूतरा
धका गेब का खाय वरज्या मानो रे चेला नाथका
रे सती जावो तांबा वरणी रात देवर मत जावो चेला नाथका।
गुरु – गुरु देव की आण देवर पीपल काटो घर छावो।
गालो गेंगा में घाव, देवर बड़ सासू साला सेली।
तीजी मायलजा री नार देवर तीन बात टालो करो।
उठ गल्ले रूघनाथ देवर तीन बात टालो करो।
गुरु देव की आण देवर तांबा की मारी चूण।
सूरव धान की नाल खरड़े गालां जी डोड़ खची।
लूंगा नणा बजार देवर कुंगमल आटो ओरसी।

डीला बणू कलाल रे डोड़ा में दारू पावसी।
बेटा ही पियो घर बाप की पोलो डोड़ा में ही मरड़ो पावसी।
गुरु देव री आण देवर मालोली मुरड़ा घणा।
पियर घणा कलाल देवर मालोली मुरड़ा घणा।
मर मँगाऊ ऊँट दारुण कावड़ा मुलकती आदि।
बेटा पीवो बाप की पोल
गुरुदेव की आण देवर मती पधारो राज में।
गुरुदेव की आण रे राणा की नारा मोवली।
थाने राखेला बलमाय रे राणा की नारा मोवली।
राण ठगा को देश।
गुरुदेव की आण देवर नर थोड़ा नारा घणी।
राण कागरु देश रे राणा की राड़ा मोवली।
राखली बलमाय देवर रात्यों बणावे मानवी।
दिन में घाणी का बैल देवर रात्य बणावे मानवी।
देदे कुल्हा हाथ रे मड़ाने घाणी में हांक सी।
अणगत लागी रावत मोजने रे नत उठ राणा मेडात।
मड़ पाग का खूरा रे जी —
फेर चोबीसी माई जियाने पे समाचार के वेगा।
बेटा ही वो तो पूठ फेर दीजो बागजी का रों।
सूता वो तो मुख पर लीजो ओढ़।

एक माई निया को अंधियारो मन देखो।
गुरु माराज मार आयो।
अबे चौबीसी माई राम की माला फेरवा लागया।
रात को मारो भगवान को सिंहासन डोलो खादो।
गुरु माराज जावो आपके माथे बगड़ावत अब का मर
जावेगा।
नागदा सूं गुरु माराज उत्तरा पाटण मे आय डेरा दीदा।
चौबीसी माई पगाँ पड़ा मान भी कई बगसता जावो।
घोड़ी तो बूली, जो बंगलो हाथी, शंकर की सेवा का लोजोरो
अरी
सवा करोड़ को पोरसो, टूट गया सूब नाथ श्याम।
खाजो पीजो चेला नाथ को, करजो धरा पर अमरनाव।
बारा बरस की था की माया। बारा बरस की था की काया।
गुरु माराज का मान माया सो कुकर दीदी!
गुरु का सवाल छूटा सो आरवीर पाछा फरबा का नहीं।
माया का डाव कीने पूछा पूछा अलबड़ी तेजा ने।
गुरु देव की आण हेलो पाड़ो जी अनड़ी रोज ने।
गा के ऊ दलड़ा की बात अरमो आजो रे अनड़ी तेजाजी।
नालरो पड़णी काल फूलड़ा मारवाड़ नड़ी बसे।
गुरु देव की आण भरदा गढ़ पाटण वा की दणी।
गुरुदेव की आण पूछो पूछो रे दादा तेजा ने।
तू अग्रवालों को भाणेज दादो लाडो बारां बड़ो।

गुरुदेव की आण तेजो उड़ता कागद बांच के।
चाले फटकड़ी चाल रे हाटक में डाका वो करे।
फेर दूंद पर हाथ मरदा ढीली पेरे धोवती।
बारायां को भाणेज दादो बरियाणी का पेट को।
अग्रवालों का भाणेज पूछो पूछो रे दादा तेजने।
माया ने किण वद खाय रे माया ने ऊंडी गाड दो।
दोनो शीशो दुलाय मरदा काल दुकाला काड़सी।
गुरुदेव की आण ताला जड़ दो बिजल सार का।
बगड़ जड़ो कुमाड़ मरदा काल दुकाला काड़सी।
गुरु देव की आण आयां माड़ल ढाका मालवो।
आप जालती ढाका मेवाड़ रे जातेड़ी प्रजा ढाबाला।
गुरु देव की आण मरदा अंतर काढा ताकड़ी।
घटतो राखवों सेर से घटतो सोदो तोल सी।
गुरु देव की आण मायाँ मरतां मूख्या ऊँट में।
रालां गोटा री पोल मरदा माया तो।
गुरु देव की आण रे अठा लड़ातर पूठी रिया।
गुरु देव की आण मरदा गढ़ रावण लंका लिया।
कर्ण लिया दातार रे सीता ने रावण लेय गयो।
कर जोगी को भेख, सीता नो रावण लेय गयो।
गुरुदेव की आण जापर चढ़गा राजा राम जी।

ले हरण्या नो लार, रावण रा दस माथा धरती मड़्या।
मॉंगा रला भुज बीसा बली सीता के कारणे।
टूटा जोधा का शीश, मरदां बली सीता के करणे।
गया रावण का राज, मरदां बली सीता के कारणे।
गुरु देव की आण रावण के सोना का मेड़ी ओवरा।
चॉंदी जड़ा कुमाड़ रावण के सोना का मेड़ी ओवरा।
गुरु देव की आण रावण की मरबा की वेल्या मली।
सोनो मल्यो ना उधार रावण की मरबा की वेल्या मली।
टूटा मोत्या करीया शीश, बली सीता रे कारणे।
गुरु देव की आण मरदा माहु सरीरवा मानव।
देवे जमी पर डाल जारे मुख्या निकल्ली गाल।
गुरु देव की आण हथलेवा परबत तोलता।
गुरु देव की आज्ञा जाने गलगी माला धरतरी।
गुरु देव की आण मरदा माला कूतां सूं भोजनागिया
गिया अर्जुन सदा पधारे राजा कुम्भ करण की खोपड़
डूबग्या लागा भीम मरदा, भीमसू भीमा बली।
गुरुदेव की आण माया दीदी रे गेल्या सूमने।
देखण वालो सूम सूमड़ो सांया सू सेवा करे।
गुरु देव की आण धानी मत कर धन का गार बो।

को दुवाई सरदार वाला कुल में गाली
जाती जा कटे लूटी कटे दीरो बेती नदियां ने थोब।
कटे तोड़ी ऊंटा बेती कतार
कटे लूटी रे थे आड़े मारग जाती जानि।
कटूं लायो रे नरवराली बिंदणी को गेणो खोल।
कटूं लायो लाखा बणजारों को माल।
बागजी के पेरे में खोते ना जन्मो।
ना दुवाई सरदार वाली कुल में गाल।
जातोड़ी जाजा नी लूटी, ना लेगयो बेती नदीया थोब।
ना तोड़ी ऊंटा बेती कतार, ना लूटी आड़े मारग जाती जानि।
ना लायो लखा बणजारा से धन माल।

एक नागवाड़ का डूंगरा तारो रूप नाम जोगेड़ा।
खूणचा बीन गाला ज्वार का बूबला।
दाणो घर में लायो नहीं, सत को मारा सत को
प्रकाश डूल गियो तो खबर कोई नो।

भोजा की माँ पुवार गूजरी।
माजी म्हारी करदे नो भोजन को थाल निधार।
म्हे जावाँ जोगी वाले द्वार।

अठे भोजन की थाल ले जोगो नीकल्यो।
गुफा छोड़ बारे आवे गुरु दियाल।
भोजन लायो जो आपनो आरोगणो पड़ी।
चेला रे चेला थू है नुगरो थारा हाथ को अन्न जल
पाणी नहीं लेवां।
नुगरा को सुगरो करो धरो शीश पर हाथ।
सवा सौ मन को है कड़ाव।
सवा सौ मण पूरां तैल।
एक सोपाड़ो करां सब महादेव शंकर के घाट।
दूजो सोपड़ो करां कुल कुलता तैल के मांय।

गुरु देव की आण हेलो पाड़ोजी अनाड़ी भोजनो।
म्हारी जाजम माथे बैठ रे माय नि।किण बिचारवाल्ली।
गुरु देव की आण रे मरदा लख परवानी मोकेलो।
मेलो राणा के माय मरदा सोनीड़ा बलवा सहाये।
मोरा पड़ावा टकला, मोरा पाला भी मूंगा पोल की।
गुरु देव की आण रे कवारियां ने हेलो पाडल्या।
जीवा कतालां सूत रे सूतां में तो मोरा पोवसी।
घोड़ा के घुर माल रे घोड़ा खूदे रे राणा के चोपट्टे।
लूमा टूट पड़ जावे जाने प्रजा कीण न खावसी।

अमर वेजा नाम रे घोड़ा ने पाछो फेरायो।
गुरुदेव की आण रे भोजो जी हेलो पाड़ियो।
गुरुदेव की आण मरदा घोड़ा मंगातो काबली।
काबलिया के काण घुडाला घोरे मड़ बाग का।
गुरुदेव की आण रे घोड़ा तो फेर मही पाल।
गाची मली काबली मरदा घुडल्या लो फरू मली।
सींचा माला निशान मरदा मोया लो माली मली।
गुरुदेव की आण रे घोड़ा ने पाछा फेर दोई।

गुरुदेव की आण मदड़ो पियाजी पातु की पोल में।
गुरुदेव की आण मदड़ो पियाजी मुंगा मोल वई।
गुरुदेव की आण जी मदड़ो सौ रुपया सेर जी।
हेर गुरुदेव की आण मदड़ो पियाजी घर पातु की पोल में।
गुरुदेव की आण रे भोजो जी हेलो पाड़ियो।
सुणले सारवी बात रे घोडी ने चोक में लाव जो।
गुरु देव की आण रे घोडी बची रे ऊंडा ओवरा।
फोड़े सोवन्यो ठाण घोड़ी बादल सू बाता करें।
गुरुदेव की आण रे घोड़ी मुंगरे जूंख पड़े।
मुगा रहे रख जास घोड़ी थाली में थोलिया करे।
घरे ऊबरा पाँव छलवा आई जी रावत भोजा में।

घोड़े जी वैकुण्ठ छलवा आई जी रावत भोजनी।
गुरु देव की आण रे बलाइड़े मजारो सादियो।
उगतड़े पर बात रे।
गुरुदेव की आण घोड़ी के पगा ठलकती नेवरी।
चाँदी री खुरजाल घोड़ी रे हरियालडी नेवर वाजणा।
छम से घूघर माला घोड़ी नाना सरा की नेवर मा।
गुरुदेव की आण घोड़ी के झूल बणी जंगाल जी।
गुरुदेव की आण घोड़ी के डमची फूदा पाट का।
गुरुदेव की आण घोड़ी के ले ताजी जुग को ताज णो।
सत जुग को पालण घोड़ी के लाख लाख का पागड़ा।
गुरुदेव की आण घोड़ी के मोरया जड़्या मचान को।
गुरुदेव की आण घोड़ी के सिंगाड़ो सोने सोनेजड्यो।
हीरा तपे ललाड़ घोड़ी के मोती बाल बाल जड़्या।
लाल जड़ी लगाम चांवड़ नो तू रोतो ओपे घणो।
तूरे तार हजार रे नेला मे चमके बिजली।
लूम झूम घोड़ी बणी हो नाच जी जासे कुणी।

गुरु देव की आणरे भोज के पइजामा का वेरणा।
नाड़ो लाल गुलाल भोज ने मखमल सोवे मोपड़ी।
पटा लाल चमेल भोज के कड़ा लंगर को पैरणो।

हेम कड़ो ल्यो हाथ भोजा के बाजू रूप बेड़ी बड़ी।
गुरुदेव की आण भोजा के नागफणी काढ्यो वल्या।
कोरा लाल गुलाल भोजा के नागफणी का धोवल्या।
गुरु देव की आण भोजने अपराणिया ओये घणी।
गुरु देव की आण भांगो सोवे जी मेरु छींट को।
जाड्यो जोसल मेर भोजा के भांगो मेरु छींट को।
गुरुदेव की आण भोजा के पेठा कान मोती जड्या।
गॅवस घड़्या सुनार मरदा कान मोती जड्या।
गुरुदेव की आण भोजा के कमर कटोरा पाकड़ो।
एक मूठ को लोही सलाकां करें।
गुरु देव की आण भोजा के बूंदी की बंदूकड़ी
बूंदी की बंदूकड़ी परम को सामड़ो।
राजा वाली वीत कड़ा करें।
गुरुदेव की आण मरदा नाण उण बनड़ो निकल्यो।
तोरण आयो बींद मरदा ले आवधा बूली चढ्यो।
बरलक ऊगा वाण करड़ा करड़ा ऊगा छपका घूंघल।
गुरु देव की आण मरदा ले आवध बूली चढ़्या।
नरा चढ्यो नूर मरदा ले आवध बूली चढ्या।

गुरु देव की आण मरदा भोज पलाणे बीजली

गुरुदेव की आण मरदा लेजो पालणे तेजा ली।
रुवड़ रमता हांस मरदा नियां जोध के नौ लखौ।
गुरुदेव की आण मरदा ने लो पालणे नीलड़ी।
गुरुदेव की आण मरदा बारा के बोरड़ी।
गुरुदेव की आण मरदा घोड़ा मांगा जो गया मांगती।
गुरुदेव की आण गोठा में नगारो लाग गो।
पड़ी नौबात नैर रे गोठा में नगारो लाव गो।
पड़ी नौबात नैर रे बदनोरा बागया बाजग्यो।
हां खेड़ा बाजग्या ढोल सिंधु लागा गढ़ां की बौज में।
शरण आयां की टेक मरदा चढ़ मत बाला जी नीकल्या।
गावो गूजरा गीत रे खातीलो जावे राण में।
गुरुदेव की आण देवर माने जी पीयर मोकलो।
बदनोरा के राज बैठी खावो गढ़ा की गूजरी।
गुरु लीजो ~~सलाडा~~ लार गूजरया कूड़े पडज्यो बावड़ी।
गावो मेंडा का गीत बैठी रहवो जी रंग महल में।
महादेव की आण घोड़ी महल तले वे निकली।
जातां की देखी पूठ मरदा सूरता की रहगी राबती।
नीचा करग्या नेण रजिया ऊंची करग्या आंगती।
मना ~~मह~~ महादेव की आणरे घोडी महल तलेवे निकलीरे
रुथान ~~राण~~ नगार घोरया पानी ऊंचा आवे। ज.ति.
~~जाके~~ ~~घोड़~~ आड़ा दे देवे तो।

घोरया :— गुरुदेव की आण घुड़ला परा करो रे लालजी।
वो भाग रे पणिहार म्हाने दन उगा री मोकल्यो।
सांझ पड्या घर जाय म्हाके बालक रोवे पालणे।
गुरुदेव की आण म्हाके फिके क परणो आकरो।
दो घुसी दो लात म्हाके फिके क परणो आकरो।
तोड़े चुगधा ख्याल गाके फिके क सासू आकरी।
सो. घोरयां म्हारी कस्या गावा की वाजो डावरिया रे।
कस्या घरां की ए पनिहार।
नियाजी गांव पारण की वाजा डावड़िया,
राण नगर की पणिहार।
गड़ तलोली वाजा डावडिया, राण नगर की पणिहार।
चूमकी चूमकी - - - - - -
बगड़ावत पालत की पोल पूछने पर —
गुरुदेव की आण चेला चाल्यो जाजो रे चेलानाथ का
चोप तले बाजार आमा सामा पालू का ओवरा।
सूरज सामी पोल पालु के फेल भाबु के वारणे।
कलह ले नागर बेल पालू के काचा जड़ा है आगवां।
सोना रूपा की पनजीन वाके सूडाला साठा चरे।
भैसां मार वे।

हंसला रो घर मन पार से परे वाले मोती चुगे रहि वा।
हंसालो घ मना पार रे पालू के पोल में।
गुरुदेव की आण मादड़ो पियाळी मूंगा मोल की
सौ रुपया को सेर रे पालू ने करला बेनड़ी।
बैठ ही पिया घर पालू वाली रे पोल
गुरुदेव की आण मूं तो वन धन बेचूं पावले।
तुगल तीन हजार रे पिचाला रा पांच सौ।
बोतल का दस लाख मरदा मार को छे पनयार जी।
गुरु देव की आण दारु काई पियो रे बेटा बाग का।
दिपा ठगा रो मेण मरदा रात ठगारा मीठ छ्या।
रती लगायो मोल मरदा कासी पीतल को सांकलो।
मागे टो चसमू को जोल मरदा कासी पीतल को ची.
सांचो वेतो राख जे, नीतर पाछो झूठो धन्या ने सूंप
अलदोजी सोजी हाठ में जा अंक लिया
कूल के हाथ में - - - - अंगूठा में रही
आगे अलदा जी सोनी के हाथ में दीदो सांची डान
वेगो दरसा कीजो सांकलारे कांटो लीजो तोल
ना लागा करीगरा का हाथ — लागा सनारा का हाथ —
वासगा राजा धमलिया छुई करले गौरे बाई —
घटो सागे वेकुठी के नाथ ईश्वर कड़ी सूं कड़ी जोड़ी

अबे कलाली पाछी निकली घरे आवता रवाड़ो
खोद ऊंडो गड़वा दीजो आओरे मद मतवाला
अबे थाने दारू पाऊं, थू कई दारू पावे लाख
रूपया को थारी छाती नीचे दीदो थू दारू रो मोल—
कतरो दारू भर के भाग वता पछे दारू पीस्या
अबे कलाली समाचार केवे है—
गा. गुरुदेव की आण करहा थारे बाप चराई है बाकरी
थोजा चराई है गाय भरदा बाप चराई है बाकरी
थोजा चराई है गाय भरदा लिया चराया केरड़ा
मादेव की आण दारू कॉई पीओ वे—
गुरु देव की आण दारू पीपेजी छोते नीमजी
गुरु देव की आण दारू पियै बिलोर कुमारजी
पिये बिमोदा का कमार जाके गधा बध्याइ हजारजी
गुरु देव की आण दारू कांई पियो है भाई—
हजार बात कई करे भाव बतादे-
गा. मने मा देव की आण मारे बरसै सावन भादवा
भरिया भीम तलाब मारे बरसै सावज भादवा
गुरु देव की आण मारे —— जो धोवे धोकर
मच्छा मारे कीव मारे " " "
मारे वकी आल मारे राघोजी वाको फूलिरिया

गंगा जमना पणिहार राधोजी वाको मृ लीरिया
मादेव की आण मारे बाराजी याद ई अंक मे
हीरा की ओला जोल मारे बारा —
हीरा री ओला जोल है मारे पण वहै मारो अकेले है
जिमेजी तोड़ा नागर बेल को पानड़ी बड़ी हाली हाथरे माय
गा. भर भर दारू लावो पातली, कूड़ो वीड़ी के मायने
एक दो मत लाव पातली, भर भर बोतल लावजे
एक दो मत लाव पातली ड़ोड़ी परवाला जोगजे-
दोड़ी रा मे जाय पातली खारो लावे हेलो पाडजो
खारोला न हेलो पाड़ो पातली मजुरा करने लावजे
मजुरा करने लावो पातली ड़ोढ़ी पर वाला जोगजे
ड़ोढ़ी पर वाला —— पातली कूड़ो वीड़ी के मायने
गुरु देव की आण मदड़ो नटायो चेला नाथका
पा बिलखी करे कलाल मदड़ो नटायो है चेला नाथका
मारी तो इरवे आंखव हाका मती करो मड़ बागका
गुरु देव की आण मारा रीता जी होंड़ा भरमड़े
गुरु देव की आण है पचतोत्या की पेरवा कॉपतो
टेर " " " "
अब —— बड़ी बो, पाछा ^आचार^ तलाब भर देवे
आपणो दास पीवतो नही दास को दाग और —— के
दाग बरोबर लाभो

पा करजाई थका आप ने डू आया जुही पराचाला
के गड़ बागा सूरा
गेल लिया देखा कलाली पाछी नाल समाचार केवे सूरा के
गा. कीदो ने टोल्या रे बागची का सुरा लेल्या जाड़ा का बूंट
पावली को दारू पढोल्यो ने रेलो रे मरदा मालूम बगा।
वेकूं
के गड़ बागा का सूरा पाछा करया दारू का दाग नीले सेंगा
बर लगा
यरो ऊँट समीला देवा आपला देवा के — पछे
आपणो दारू पीवांगा. मर 2 ऊँट सलीता येरुमल
के कोई ला परबत पर धार देवा लागा
वो याटा को सिंगासन नाक मुड़ने जो पेट मे जाते के बागी
के घोरे
लागे तो राजा बासगा के पुत लागी सातवे पियालो
के नाना बासगा पवरा बोल्यो धरती से मार कीले जाऊ
सामो आयो जीका उपरे
दाणो मेले पृथ्वी को, मार मेलायो. के पिया लोको
नागा बारे आरियो बारा बारा — का फेर मे पुकार
के
समचे सकड़ा बछाड़ा बलता बलता आरिया
भगवान कीदो विचार कनी राम काल बोल्यो पे
डाकीदो
दे पूगी हाथ में पासगा के सामो मेल दीदो।
मरड़ टरड़ ने नो टापरा मे गाल दीदो
भगवान कीदो ब्राह्मण को भेरव —
कनीराम रे कई पकड़ो अंदाला सपलेटे — छोड़ो

थने धजा धोवत्यो देडगा, परो छोड़
के पियाला का देवता वासा बोल्यो — काम आपका
या करजाई — कनीराम छोड़ोतो भगवान री
दरगे में हाजर वियो, भगवान की दरगे हाजर बेगही
फॅकार मारी भगवान का हाथ को कवल को फूल
बाल — भस्म कर दीदो
को पियाला को नाग आडा बलता जलता देख में क्यु आया
आस्यो धरती पर — कुणजाण्यो जी मारे दास की छोतलगा
माई उस्या तो बगड़ा वारजाण्या — वानेखपाणो तो धरती को
भार केलू नीतो छोड़ दूरो होजाऊ — माई वाकी वारा वरस
मारे मारी मोज नहीं, पियाला का नाग कीदो विचारकेमने
छुट्टी देवे तो मूं ड़सन डरो आऊं तो भगवान होकम दीदो, जाओ
डस आओ। के शेष नाग मेले लिया, चाल्या गरहा वटे
आगे नियाजी ने छ महिना की आगली पाछलीसमके
कह्यो दादा जी पिलाला को नाग आरिया सो अबे कई
कराया के आगे नियाजी फूला की सेज बिछादी —
मोगरा का आन्तर छड़काव लगा देरा। या करताई
दीखा नाग जी सी देखे तो आगे शेषही सेवा दीखे
दुश्मण एक दीखे नहीं। के पाछो भगवान की दरगा
पाछो — वियो नाग। के भगवान देख बोला

इस लीदो — तो नाग बोल्यो के वे होही चांग चौहान
का पूत मूं हूं गोगा चूड़ा णीके पूत दोई गोती माई नेगिया
बीड़ो फरै तो तीस करोड़ देवता मे, चौतो देवत नले बीचा-
बदनोरा की चावण्डा बीड़ो झेलो बगड़ावता ने खपावालो
गा. गुरु देव की आण पाँचोड़ी देसा मते मली भगवन्त के दरबार
धोड़ी झूली मू बणू बणू धोरेला मे गया
तीजी वहाँ हीरा डावड़ी चोती पातुरी कलाल
पाचवी बणू वरजू कांजरी तो धार नगर के राजा के घर
बश्न बांधू अणी हाल चाल सू बड़गावत ने खपाऊ
तीना गाल तो लेऊ भगवान मूं और चौथी गाललो आप
धर बदनोरा सू उतरूगा नरवर गढ़ मे जाऊ,
सिंह सोलवी देव पड़ियार राजा के घर जन्म लेऊ
राणा कांधली रावजी ने परणू महाभारत मचाऊ
और बड़गावत ने खपाऊ,
या वेलाई चाती गाला लीजो आप — मलासर की
डूंगरया जाजो भगवान — कांकड़ फूट ना कवल फालर जो
फूला मे लीजो अवतार — काध — रावजी को
वेर आप लीजो पद्दे मने —
पाछो तो अबे कई देवी चावण्डा बदनोरा सूं उतरे
गा. धीरी उतरो आजी धीरी उतरो पु भोगण जोरी धीरी उतरो

धीरी उतरो माजी धीरी उतरो थारू दुनिया डरे माजी धीरी उतरो
धीरी उतरो " " " थु धाराँरी धरियाणी देवी धीरी उतरो
धीरी " " " " थारो खप्पर खण्डो ले माजी धीरी उतरो
धीरी " " " " थारे सिंह की असवारी देवी धीरी उतरो
धीरी " " " " थारे काले गोरे हैं लार माजी धीरी उतरो
धीरी " " " " मंगरा का मोरचा माजी धीरी उतरो
धीरी " " " " मोजी की उदली धीरी उतरो
धीरी " " " " निपाजी की ओनाचना धीरी उतरो
बीड़ा दिया ओ भगवान भारत में ———
" " बगतानीरा मेंहदी राचली।

अबे देवी बदनोर का ढाल सूं उतरी नरवर गढ़ में आई सिंह सोलंगी देवी राजा के जन्म पाई एक दोदना की डावड़ी सप्त बरस में जाय अन में धुमा लीदी तीना कांगरा नरवर गढ़ का पड़गया और नीम सूदी महल धुज गया।

अब के राजा जी देख बोल्या आज नीम सुदी मेल को धुजा रे के आपके बाई सा जन्मा जणा धुमा लीदी जणी सूं धुजाई बाईसा ——— वेणा आगया सगा यहा करवा की ते मिला ——— बाकला ने

दीदा सोना रूपा का नारेल सरीखो सगो देखजो, घर वर
देख जो सगपण का आके या के अठार ब्राह्मण गेले किया।
के आदि शक्ति हैं जो —— कठे जावोरे भोला ब्राह्मणा
आपको सगपण करवा जावा —
कठे करोगा
जठे सरीखो सगो —— देखवा वठे करत आवागा
सरीखो सगो देखो मति सरीखो —— देखो मती
एक ही बाप के चौबीस बेटा वे जठे सगपण करनो आवगो
ब्राह्मण गेले होवे और कई बात पैदा होवे —
हा गुरुदेव की आण मरदा खड़े बरामन निकल्या
जावे उगाणे देश मरदा खड़े ब्राह्मण निकल्या
जावे धराऊ देश मरदा खड़े बरामन निकल्या
जावे अथुणो देश मरदा खड़े बरामन निकल्या
जावे लंकाऊ देश मरद फरग्या चारों ही खूट के
पण नहीं मल्या बड़ा भाग का सूरवा, ब्राह्मण फरग्या चारों खूट ही
बड़ा घबराया —— मलवा पर आम्बेसर की ——
पर ब्राह्मण जान बैठ गये।
ब्राह्मण के गज वद —— गाबा फाड़ —— का पता आंजी
सरीखो सगो मिल्यो।
चौबीसी बगड़ावता की बढुआ पानी भरवा आरही —

तो भैरू जी की टूर गावती आरही –

गा. मदेसर का जांगा वे ओ चलता डोलर आया जी

——— पूछे सुणो गोरा जी सुणो मदेसर चाला जी

बारा मन का तेल बाव्हा मण तेरा बाटी

कालो गोरो आवण लागा रंगले पकड़ी लाठी

कालो गोरो जीमन लागा डाकण कूटे छाती

बाग बावड़िया भैरू बराने गढ़ बून्दी कीवाड़

चालो ऐ लइया देव मनावा बोला अमृत वाणी

दाड़म तोड़े दाख मेवाड़ा केल करे पनवाड़ा

पगो भैरू के ———————

हाथ मरद के गुरजा वराजो काना टामके मोरी

गणी खमा मतवाला मदेरिया लोर रावली बोल

खतणा लागो मोचन लागो लागो लाल लबारी से

हाथ जोड़तो ऊबी ——— ऊबी मांगो बेटा

ऊपर वाड़े म्हाके वरियाजी जानी लीदा लेठा –

बादशाह परचो दीदो गुगरियाँ की घाटी –

अल्ला तोबा कई कवे अब यो देव हिन्दू को लागो

बादशाव तो भैरू सूजो लेहमा नो लारा डी

बाइजणा सामी नालती व के गढ़ गूजरा बोली

दीखता उमला

के तो पाबो राजा रावले ड़ूडा के रांडा को दुख लागो जी
दीखण दूजा गला उजाला दीखवा गोठा की गूजर
मारा गला मे   राजा रावले ड़ूडा ना माने
रांडो को दुख लागो एक नरवर गढ़ में जन्मी –
डोकरी जीको दुख माने लागो
बांके हावे वर मे चौबीस भाया की जोड़
बोली चौबीसा भाया की घरावाली तो मही हा –
हाथ सूं बतावा हाथ काट नाके, आंगली सूं बतावां आंगली
काट नाके –
बेटा धुर बदनोरा के ढ़ाल जाजम राल   चौबीस भाई
कोर बरामना गूखा तरस्या तो बोगा –
गूखा तरस्या हो रसोई पाणी कराणो पड़ेगा –
कतरो सामान चावे घड़ी पाच सेर सामान घणो –
घड़ी पाँच से वे कई करा   दो दो
साड़ा बारामनं आटो कीजो रे दाढ़ा की गुगर
साढ़ा तीन मन दीज्यो दाल
जाता ही गोठा मे सोना रूपा का नारेल पुरिया
रावत भोज बोल्या मेहन्दी को पाज लागेजो लगा दो, आपने
रावजी ने परणा देवा –
रावजी को ढकरालो नीमो नाट गियो

नीमाने आरीपर रावजी को वन्यादक बदाल दीदो—
सकया मंगला चार गावा ढुकगी—
लुगया, बलाणिया मेरु पगेवा जावे, बनौला देवे—
नीमारे नीमारे रात घोड़ी सांगा —
लरवया — भेजो न्यूतारा के नूता जाने की चराई वरीको
गा. मन मादेव की आण नूत देवड़ गद का देवड़ा
मन मादेव की आण गारीनूत जी जैसमेर का
मन मादेव की आण चितौड़ गद चीतरा
भीलवाड़ा का भील भरदा गढ़ रविन का   का
गुरुदेव की नूना नूता   रानवाड़
चद वेगो आव कुलु भी सनवाड़ का रावजी तलीजाने
रावजी बोल्या कीयानूता सौर मौकल्या—
नीयजी उबे बड़गावतों के नूतो लिरवने बड़गावत ने परानल
ना दादा रावजी बड़गावता के नामे कलम हाथ मेंनी लकू
उबे रावजी हाथ हाथ लरववा लागा, लरव बे लरव परवानो
मोवलू बागा का सूरा,
लरवीया लीजो फौजा   हाथ साथ में लरवजो रेवड़ वागा
का सूरा लाजो काला गोरा चार
लरवकर लरव परवानो मोवलू बड़ माता का सूरा घोड़ी
बूलीने लारा लाजो —

हाथा मे लूवाली सेल,
अदाही बढाजो केसर कसूमला आधा धोला सपेत
चल जाजो मोही डाडा का बकेल
बाकड़ी मुच्छा पर दथ्यार ठहरावेगा गढ गोठाका अमराव
तीन ओला लिखी लेकर साड़ीवाल भूरया ऊँट पर सवार होर
साड़ीवाल कठे जा नीमजी पूछो, साड़ीवाल बोलो गोठा दड़ावता
नूतो देवा जारियो हूं।
देखा दादाजी मनरा मोला घणा परवानो कस्यो लिख्यो
तो निकलो आगे लखे के सुना तीन ओला का —
चल — लख परवाना — बगाली कासू जो —
हाथी लावो मती अश्वर गढ़ में —
घणों दीखे नूद को कार —
घोड़ी खूली नो मत लावजो मत लाजो मोरी —
— दीखे गढ़ नरवर में चारों को काल
केसर कसूमल —
ओलू दोलू लिखदू ओलबा रे वाग जी का सूरा बचे
लिखु गाया चरावा की गेरी डाग —
के बड़बाग का सूरा जान चढ़ाई चला आवे राल नगर के मांय
ठहरायो नीमो नाल कई समाचार केव रावजी नो
जाने की चढ़ाई करो बड़गाबता घोड़ा, घोड़ा पर घोड़ा खूदता
जारिया

मों थाने घणा बरजा दादा जी थे मत लीजो गोटा का गूजरातार
तेरा मेरा मत करजो ठकराला नीम जी गोठा का गूजार घणा मत
वारया मूंगा होय—
खंडगानिया को खेंचगिया बागजी का सूरा — बनो बाघो
ना बड़े अगा—
केतो मारे बलवो रो हतो सिंह के आज पड़ियारा — के

कोईतो परवत आड़ो आरियो — जोगेलो हो जावै—
के नियेजी वाल गोड़ी बाये बिजलियों खड़का सातवे —
खाड़ो जूल्या रावजी कीनो तूमा वाल फौजा का गरबगल
गया मा करता ही — जान तो चलीजा रही है के हीरा के
ओर आदि शक्ति के रंगमेला में वाता वेवा लागी
गा. ऊंचा सूं ऊंची मढ़जा रे मोस हीरा फूल गोरवड़े देहाथ
कठे आता दीखे माया मारी मोटा घोड़ा का असवार
ऊँची सूं ऊँची चढ़ती बाई दीदो फूल गोरवड़े हाथ—
केतो दीसे जोगियावली जमता के दीखे —
हीरा रे हीरा देखवा सुदी नहिं
नागदा सूं जोगी उतरो बाई मारी जावे पोखर जी के घाट
जो दीखे जोगा वाली जमात जो वे आता दीखे मोटी
घोड़ा का असवार—

हों हीरा सुदी नाले है छोरी कई सैलाणा बनड़ा आरिया
भोजा के दीखे दीखे सेवरो बाई मारी रावजी के माथे मोड़या
बरणो मोड़
दोई बनड़ा थने परणता दीखे बाई सा अणी नरवर गढ़ की —
एक एक नर के लारे दो दो राज उदल दी देखी पवन देखणा एक
एक नारी पर दो मोड़ बंध्या वीक —
मै मेला मे बनड़ी एकली करे जावे मे दो मोड़ बन्ध्या वींद
के हीरा मन मे कीदो विचार कलस ले बंधावा नीकली
बगड़ावत के मूड़ा आगे कलस बंधायो एक मुन्डी
मोरा की मेली हीरा यो कलस थारे रखवा दे —
मारे यो कलस न रखू रावजी को रखू
कुमार के जा हीरा कलस लाई कान मू टोटी काड़ दे आई
नाद ले आई — नाद ले हीरा कलस बंधावा जारही
रावजी हाथी पर सवार नाल्या आवे जोई कई है ——
नीमा के कलस आरियो हेटे कुण नर है के नाई वोहे
हीरा डावड़ी कलस ला रही सून मारो हाथी अम्नावड़ी
वर जावा तोई यो कलस
हीराकलस रावजी के हाथी के आगे मेल्यो चाँदोड़ी
रूपयो मेल्यो —
ठकराला की मोजी देख्या रावजी कई दरियो
हीरा पाछी कलस ले भागी बाई सा वूढ़ी ——

तोके बाई सा आगे तो जदे ही —
हीरा बड़ बगड़ावता का डेरा खानो लरवाय —— मेंऔर
रावजी का —————— में
जावो मारा हीर जी रावजी के डेरे जा फूला का जबाब लाओ
गा. गुरुदेव की आण फूला का बोरा मे पता -
ओरी लेती जाय हीरा अपी बड़े से फूलड़ो —
गुरुदेव की आण रे वैसारव फूले कवलो
सोनो बटो रवाजाय रे वैसारव फूले कवलो
ओरी लेती जाय छोरी राजा को फूला रो पड़ो
ओरी लेती जाय छोरी सावल फूले तोरमी
ओरी लेती जाय छोरी बड़ो फूल कवल पा को
कवल बड़ेरो फूलड़ो हीरा मारी धरती अपरे कोयनी
के हीरा बाग मू गेले की बाई सा ना के आई जरवर कुमार
—— बाई सा ये दी वीर राजा फूला का जबाब
गावो मारी हीरा आबे बगड़ावतों का डेरा सूं फूलरा जवाब
के हीरा बगड़ावता के द्वारे गी, बगड़ावता के डेरे ——
बगड़ावता की जाजम पर ——
निमा छोटो नीसरी कर रियो नीबूं नीचे सालुगरामजी की सेवा
—— नीबूं की जाड़ की हीरा के आदो —— तोड़ नाखियो आदो
गालड़ो फाड़ नाख्यो है हीरा मगी पाछी आगे बाई सा. मेला नूं पाछां

के मारा पैली बगड़ावतनो धू ——— फड़ाने गयो के आदि
शक्ति दो एक हीरा के ठोक दीदी —
कठी वे हीरा पूरा मेल में लूगई, कई देखवा वाई सा हीरा ने गावा जावै
गा. चाल मारा हीरा जी मूँ चालू बाजारा में चालां जी
बाजारा में चाला मारा हीरा जी चाला सोनीड़ा के चाला जी
सोनो सोलवो लावां मारा हीरा जी नतड़ी घड़ावां जी
नतली पेर आवे भोज ने ~~[illegible]~~ मोवण लगानां जी
धू चाल मारा हीर जी मू चालू आपे समँदरिया चढ़ चाला जी
समंद रिया चढ़ चाला मारा हीर जी नगीना लाला लावां जी
नगीना लाला लावा मारा हीर जी नथड़ी में रल कावां जी
धूं चाल मारा हीर जी मूं चालू आपे बजारा मे चालां जी
बजारा मे चाला मारा हीर जी आपे मोती सेठ के चाला जी
मोती सेठ के चाला मारा हीर जी आपे आछा सालू मोलावां जी
आछा सालुड़ा मोलावा मारा हीर जी छपवा ~~कोर~~ देवावां जी
अवली माया अवली धू रावत भोज की घोड़ी बवली
असरी हीरा असरी थने ~~खांच पैरा दूं टोटी~~ खाण्ड सोलाड असरी
~~काली हो हीरा काली~~
खोटी रही खोटी थने कान पेरा दू टोटी
काली हो हीरा काली थनै गला में पैरा दू ——
काली हो हीरा काली थनै चाके नाय घड़ादू

रुठी रु हीरा रुठी थनो लाल पहरा दा चूड़ी
मानो मारा वड़ारल हीरजी थारा वना ——
वे हीरा पाछी गेले वी तो जावता ही तो लरवा बाग में
निपा छोटा नेत जी ने कई —— लेब केह
हरियाला नींबू —— छोटा नेतजी वीके कीदी नीबू वाली चोट

या कहता ही रावत भोजने हेलो पाड़े तो कई फूलबा जवाब देदे
गा. गुरुदेव की आण हीरा अणी बेड़ेरो फूलड़ो
औरी लेता जाय हीरा कन घोड़ी कन गाय
रेवत ठावे राज रे गावत री गाया —— वड़े
गुरुदेव की आण हीरा अन्दर वरसे धरती नीपजे
जगतारिया संसार हीरा वरसे धरती नीपजे
महादेव की आण हीरा माता के ओदर नीपजे
महादेव की आण हीरा सासू के चवरी गाय
महादेव की आण हीरा तीरवा पान तलियावसू
तीरवा पान तलियावसू चासा में चोपड़ —
गुरुदेव की आण मरदा हरा मंदरा दिवला गये
ओसी लेती गाम छोरी अणी बड़ेरो फूलड़ो
राड़ पाना वाणिभाव नातो जीणी मिसरी नीपजे
रुई के कपास जीरा सारा कपड़ा सीवजे

रूप चदे संसार वाका सारा कपड़ा सींव जे
रूप चदे संसार वागो वणे है जी भगवान के
चाँदो के सूरज वो तो सेस —— ले उगसी
ओरी लेती जाय हीरा अली बड़ेरो फूलड़ो
कन रुपयो कन राम छोरी सारा राम रुपयो लेट
राम करे जो होय छोरी सारा राम रा —— करे
ओरी लेती जाय छोरी अली वड़ेरो फूलड़ो
बड़ो फूल जबान हीरा इमे जी अमृत नीपजे
जुगातरियो संसार हीरा " " " "
ये जबाब थारे बाईसा नि जा कह दीजो
या करता ही चक के कीदो मन में विचार
जा वीरा बाईसा के डेरे जा बिजल्यो खड़क ले आवे
के हीरा नीकली जा बगड़ावत का डेरा सू बिजल्यो खड़कू लाई
किके बाँधू डोरड़ो कीके बाँधू काकण चार
खाण्डा के बाँधू डोरड़ो कुड़ल्या के —— चार
वेगर मारिये ——————
सातवों फेरो सू फरी मारी हीरा ने हेलो पाड़
हीरा मरजो मारी सारव, पड़ दे —— भोजने
चोड़े-को राव
जा हीरा बगड़ावत ने हेलो पाड़ तोरण पर आवे व

रावजी ने हेलो पाड़ तोरण पर आजावे
के हीरा हेलो पाड़ो बगड़ावत व रावजी तोरण पर आया
तो देखा घोड़ी तोरण पर ऊबी रावत भोज घोड़ी ने कई
समाचार केवे

गा. वार वार करू पूछता घणी ———
गुरु देव की आण घोड़ी नाचे जी राजेया भोज की
नरवर गढ़ की पोल घोड़ी " " " " "
धरे अपूरा पाव घोड़ी " " " " "
गुरु देव की आण घोड़ी ऊमड़ टाड़ा बांध दू
लेगावे ——— धेर दान कर दू चारण भाट ने
दूणा वाट लु दाम घोड़ी खड़े बजारा बेच दू
" " " " तोरण बांधो नरवर गढ़ की-

गा. घोड़ी घोड़ी मत करजो पृथ्वी नाथ घोड़ी ऊबी अंग मरोड़
नरवर का तोरण बांधता ——— ने देखी डावां पूर
घोड़ी घोड़ी मत करजो पृथ्वी नाथ घोड़ी ऊबी बसवा बीस
नरवर गढ़ का तोरण बांधता न देख्या धाके धड़ पर शीस
डाढी बांधो सर की पगड़ी गाढा बराजो मारी पीठ
तारो ध्रुव दशा को घोड़ी बताऊ लेठ कूठ -
के मड़ बाग का सूरा राम पड़ा का सोमड़ा सूं तोरण (बांध्यो)
के नीमो देख बोल्यो दादाजी तोरण ——— बांध न ———

बींदणी सी पड़ परण जावेला —
नीमा रे नीमा तोरण बाध्या बींदणी पा की न वेगी
न वारा राव जी तोरण पर लड़ाई कराग़ा —
गा. गुरु देव की आण मरदा लारव परवाना मोकला
कालू मूणो सनवाड़ थूं तो चढ़पों नै आवजे
रण मा ——— आवजे
गुरु देव की आण कालू केलारव घड़ी — पड़े
पड़े ——— वेगो आवडो ———
कालू लारव घोड़ा सवार रण में वेगो आयो
गा. गुरुदेव की आण माका सुना तोरण बांध्या
वाण्या बामण ——— थे तो वराजो ——— गूजरा
थाकी गोठा के माय थे तो डाक चटोला डुंगरा.
परबत दीजों पूछ रे चन्द्वल छोटी गूजरा
जाने बाई ऊंठा की पूंठ
गुरु देव की आण मरदा ———
जबरी लागी लाय मरदा " " "
गुरु देव की आण कालू ——— रे ——— कई करे
पेली बरछी घाव
गुरु देव की आण पूतो परोजो जाजे तुरकड़ा
थारी सनवाड़ के माय रुई बेच घोड़ो लियो

पीतल बेच ——————— बेच घोड़ो लियो

के ९०० पठान

तोरण पर कालु मिया का काम आगया

के कालु मिया के गियो की ——— बजावतो दल्ली मे

धन धन्नी घणो खावजो खाणुना घी

थारी रावजी की नौकरी जीव बचायो अल्ला खुदा

नीमा रे नीमा आवे —— लड़ी — लड़ाई करी कालू मियाँ—

सुणो दादा जी मू लडू मू झगड़ो करूं तो कई ———

गा. गुरु देव की आण मरदा नियोनिमलो ———

जनरी लागी रोड रे कटार रू करला पेर

तंग झपहे तरवार बरछी माँग राव का बांरड़ा

गेला गावे गीत रे बरछी मांगे मड़का बूकला

गुरुदेव की आण मरदा तोरण मारू तीन सौ

हथलेवा हजार रे ड़ोड़ा में मारू ड़ोड सौं

नियो मरद रो नामो भीतर में मालो नोपडू

हल में पूरी हाल रे पूठी मे ढोम्यो पाचरो

कहू पलड़ा की बात ——— आवो ———

जाल्मा की झाड़याँ खोल हीरा देवर देवर —

गुरुदेव की आण ———————

रंगता को खुणचो लात हीरा दौड़ी ————

वचन दियो भगवान रे रत्न की महदी राचनी
डोड्या में आयो डोकरो छोरी पेलो ——
हीरा मारी पेलोड़ो फेरो मू फरू, भगवानने देदू साख रे
दूजड़ो फेरो मू फरू देदू देवता साख रे
चाँदा —— ने साख रे तीजोड़ो फेरो मू फरू
मारी वे माता हेलो पाड़वानो लखमी वधा मूलगी
खोटा लखणी लेखरे वा " " "
" " " " मारा लेखलख्या बगड़ावता
पानो पड़ा महदी राव रे लखजी
चोथो फेरो मू फरी मारी बाया ज हेलो पाड़
थे तो देवोजी बाया डाव जो—
आई धरम की बेल रे पाचमड़ो फेरो मूँ फरी
मारा पेचाने हेलो पाड़ थे तो देदो पंचा डायजो
आई धरम की बेल रे छटोड़ो फेरो मू फरी
मारी हरा हेलो पाड़ पूतो देदो हरिजी डायजो—
—— कुमार मारे —— खूटा घड़ी
गुरुदेव की आण चवरी मड़ी ब्राह्मण देवता
मालाणी गन गोर —— के चावण्डा
दियो हथेले हाथ मारे चाँद सूरजा साखी दिया
वचे —— भगवान मारे चाँद सूरज साखी वण्या

गुरु देव की आण सातमड़ो फेरो मू फरी
मारो वीरा ने हेलो पाड़ थे देवो वीराजी डायजो
आई धरम की वार बेना हाथी देदू ही दता
घुड़ल्या री घुड़साल " " "
पाली पट्टी को गाँव बेना चरवी टुकड़ा मीं डाचचे
बड़ी देई गुजरात बेना लेलो बेना डायजो
घुड़ला ने दीजो रोग रे घुसत्या पर पड़जोविजली
पाली पट्टा को गाम बालू जालू रे चरवी टुकड़्या
कुंचो दू गुजरात काँटा देदो जी लोड़ मालवे
आई धरम की वेलह वीरा जी देवो बेनड़ने डायजो —
गुरुदेव की आण वीराजी गाड़ी वेल्या देवजो
गाँगो ढाली लार वीरा जी चोथी देदो हीरा डावड़ी
वा पाचवी काजल री डाबी देवजो रे —
यो डायजो देवता ही आदिया — नोरथ होद गेले कर
दीदी
दुपटा फाड़या रंग बिछड़ा रस्ता दो दशा जाय —
बार २ करू पूछना जी छेज वाल्याने मोत्या की —
गा गेले ले रे गेले रे गंगो जी ढाली गेले ले
गेलो ही है जी गेलो यो धोली मगरम चीलो
चाली आरे चाली आ मगता री मूछा चालीआ
गेलो ले रे गेले गाँगा दूर — है

गेलो है जी गेलो ओझाया की उदली गेलो

" " " " " ——— गेलो

गेलो है रे गेलो रे गेले गंगाजी हाली गेले

गंगा जी हाली माने तो तो चांवडा कई जबाब देवे

गा. कड़ा घड़ा दूं ——— दू धनक तारा की पाग

बार 2 करन पूछना ———

गा. गुरुदेव की आण देवी ——— सिंह की

——— बदनोर का

कूद पड़या ——— आन धारी कामा समेटो चावड़ा

———

के सिंह की हाको वियो के तेजा सिंह जी पाछा नाल्या

तो गढ़ चौबीस भाया ने काई समाचार कोवा

गा. जालवृन्ता माँ डेरवा बगड़ावत रे समदर लागी —

———

माया ने गला की पागड़ी उलटी पकरी नार —

वार 2 करन पूछना रे राली का रथड़ा ने पाछा —

रथड़ा की अपटा उड़ती आवे ———

के घोड़ा ने पाछा फेरन के जियोजी पाछो आयो

हीरा ए हीरा आवे जो कूटा का लाडला जेठ जी तेजो जी

माँ का वचन साँचा के काँचा — छोरी 2 पाछा अवेजो आरेया —

नियोजी, नियोजी का वचन साँचा क काँचा
बाई सा ध्रुवजी जोतो बाकी बाता डगे
गा. गुरुदेव की आण भाभी यो बड़ल्यो या बावड़ी
अठे शंकर धाम भाभी " " "
गोट गड़बाई के घाट वचन करेगी वेटी वाग
हायो कीजो हाथ —— बया हाथ की मुंदड़ी
सेन्दाली में राख " " "
ले उदलाला लार भावी छटवे दनड़े आवती
" " दादा सवाई के ——
साडू के लोड़ी सोक भावी दादा सवाई के ——
देवर जी ये वचन तो मारी हीरा ने —— तो याही देवे
साचा वचन देवो —— या वेत का भावी चावड़ा कई समाचार
कड़क मसाला मण्डी पे चुघोरे देवरा लाडला —
आई नदी अबह तरो आजा
पकड़ ——————
—— मंडा चौबीसी माई वाकी मल पर हाथ धरो
कड़क —— में मण्डी मे —— उपडू तरा आज
पकड़ मॅंगाओ राजा व संग ने चौइस माई ——
हा देवर लाडला ये वचना मु सांचा जाणू

गा. गुरुदेव की आण थारे आऊ ओ तेजा जेठजी
,, ,, ,, जेठजी कदी पदारो पावणा
मूंगी करू मनवार थारे छत्तीस —— बतावती
भोजन करदू त्यार थे तो जीमो लाडला जेठजी
मूंगी करू मनवार थारे आऊ रे तेजा जेठजी
——

कोई ने तेजा रे घाव मेलू लेजावे जाके गावजे
के —— जीव के ——
कारागाड़ा लेला माका माथा ——
गा. गुरुदेव की आण थाने सीलो सरावूं जेठजी
जोल्या लीजो जोल थने ,, ,, ,,
गुरुदेव की आण बाबो बीजे रे तेजा जेठजी —
लीजो भगमा मे स ,, ,, ,, ,, ,,
,, ,, ,, कोड़्या बीजेरे तेजा जेठा
कूंचा समेती हाथ बाबो बीजे तेजा
—— आदेश है जाना मे मद्रा पेरजे
लीजो —— मेवरे डोट्या मे धूणी गालजे
रोड़्या —— रोज थारे —— हथाया बैठजो
चूले हरियानी धोब थारे गुवाड़े बूल्यो आजो
लाम्बे —— का ढेलड़ा थने छाना —— छाप

गा. गुरुदेव की आण हलता लूटू घड़ाका केरड़ा
लूटू गोरले गांय " " "
गुरुदेव की आण —— देखी मड़ारे ऐ लखी
नीबू डेरया बाग देख्या जी ——
रावजी का सैला में रानी चावड़ा वराज मान वोरिया
बिना डोलर करयेल्या हिंदो हिंदारा रिया ——
गुरु देव की आण रे डोड्या में आयो ड़ोकरो
कई करेलो रोल —— बिधा खेलू हरिजी
गई जमारो हार हीरा ——
गई जमारो हार हीरा कागद वेतो वांचलू
कर्म न वाचो जाय हीरा —
डीकरिया ने आवे —— छोरया ने आवे खेलणो
गई जमारो हार हीरा बालक वेता राखू
योवन राख्यो न जाई
गुरुदेव की आण हिरा आंधो वेग्या बावल्यो
—— वेगी माय हीरा वर बूडो परणाय —
गई जमारो हार हीरा कीनेजी देउ ओलबो
कीने देउ, गाल हीरा "
—— ने जाना। हीरा देऊ —— ने ओलबो
खोटा लखणी लेख मारा लेख लिख्या बगाड़ावता

पानो ——— मारा लेख लिखा बगड़ावता

गुरुदेव की आण रे परण्या ने बना दूं

ढीला पशु बलायरे ”

” मूं ——— पाडू ———

पड़ो पाड़लो बाग बाइजी परण्या तो सर्ती मारजे

मोटो लागोला दोष ” ” ”

मोटो लागोला दोषरे परण्या नो मारे कलाडू से

के रावजी ने खोर क काडा चकराली जाजमा पड़ी

सोला बतीस उमराव बैठा तो देखवा रावजी ने नीमो

बाल कर लोड़ी रहसी का मेला का कई समाचार केवे

गा. राते लोड़ी राली के मेला पधारया दादाजी का माग थाकागात

वे तो राजो अमल नो ——— के त्याग ——— काहाथ

रा. आमेला कापकत्या परा पड़ावजे आड़ीखुदावजे खाई

पारा ——— आपणे हा छोटा नीमा भाई

सोनी में कर ——— मेला का पगपा पड़ा आड़ीखाई खुदानकी

हीरा स हीरा थो जो दुख दर्द मिट गयो छीका में ———

जावे और छीका मे ही चूरमो आवे कनक महलमें

गा. गुरुदेव की आण हीरा तीन बात का ——— लेवा

काजवी मेंहदी, तंबोल हीरा मतरो नखरोजदीकरा

जाऊ मोज की लार भैंवरो घणो दुखी है हीरजी

जाऊ भोज की लार थने ले उदलू रेही—
साडू पर लोड़ी सोक आवे परा चाला रे हीर जी
घर बदनोरा के माय आवे गाड़ी ———
गुरुदेव की आण मूलो झाला ———
रंग ——— की लार मूलो सूराजी — निकालू
——— भोज की लार धोरी लुरा गाती निकलात
हीरा बाई को ——— कई समाचार केवे
बाई कई दन रीजी गुजारा
गा. गुरु देव की आण बाई कई दन रीजी गुजराने
गुजार बड़ा गुवार " " "
गुजार बड़ा गुवार बाईजी दाद पीये पी बैठ दे
" " खेत कमयो पार का
आवे आधी रात बाई जी कई दन रीजी गुजारा
उनकी खेचातान वाके धोका में चलवे, चूरगो
——— घाट में जाय वाको " "
गुजार बड़ा गुवार जावे, फेरा ग्रूदंड को पेरणो—
हाथा में पीतल होय वाको चूड़लो कोई ना दांत को
गुजर बड़ा गुवार चीता बेला दुर्गा जपती सबला पर
तो अबे हीरा ने ——— के समाचार देव

गा. गुरुदेव की आण छोरी गुजर गुजर कई करे
वे गुजर तो ओर जॉके नाग फली का धोवता
रेशम हदी कोर बाके नागफली का धोवता
गुरुदेव की आण चूड़लो फोडू जी हाथी दांत का
हाथा मे पेतल पेर चूड़लो फोडू जी हाथी दांत का
जाऊ गूजर की लार हीरा मसाला निकालू
गुरुदेव की आण बाई यू कई दनरी — गूजर डे
गूजर बड़ा गुवार बाई जी मसाला — निकली
आ ——
गुरुदेव की आण बाके बरसे सावण भादवा
मचे गुवाड़ा कीच बरसे सावण भादवा
मचे गुवाड़ा कीच करके रे ——
वे देव गुवाड़ा वाट थारे कुणी बुवारे काड़सी
कुणी मरेला —— थारे कुणी ——
मुई मरूला —— रे मारी हीरा बुवारो काड़सी
गा. गुरुदेव की आण हीरा बरसे सावण भादवा
माचा गुवाड़ा कीच माके दोर जठाणपा
देवे गुवाड़ा वेहि माके
गुरु, देव की आण मारे हीरा बुवारो काड़ सी
मुई मरूला —— रे थारे —— लालरी

गुरुदेव की आण हीरा रोड ——— ओ
बाई सा. आल तो दुखियारी बाकी है
गुरुदेव की आण बांके सो सुवाड़ी सौ बारवड़ी
लाखा लखायो गाबेर चणोड़ी साढ़ा तीन सौ
ढाल्या रो देपन पार रे छोड़ा धोयल का केरड़ो
पायल ——— ——— मैं तो छोड़ा पायल को केरड़ो
धोयल धुवया जाय रे भोजो जी अंगरा आकरा
कुणी धुवला गाय रे कुणी पकड़ेला केरड़ो
गुरु देव की आण है भोजो जी अंगरा आकरा
पड़े मोर के ——— माय ——— धाया ———
पड़े मरे के माय जादी चीत ——— सबला धराकाढ़े
गुरुदेव की आण खाटा लागा जी खारा खोपरा
मीठी लागी रे वला गूजरा की खाटी छाछ ओर
बाई सा गुरुदेव की आण हीरा सो ——— सौबारवड़ी
लाखा लखायो गयाब के धीलोड़ी साढ़ा तीन सो
ढाल्या को देपन पार वोतो छोड़े धोयल को केरड़ो
पायल चूप ——— जाय योतो छोड़े पायल को केरड़ो
धोयल " " " "
गुरु देव की आण हीरा मूं पकड़ूला केरड़ो
मोज दुरला गाय हीरा मू पकड़ला केरड़ो

मोज दुरला गाय रे चारियो मे सेड़ो वाडसी
चित दुर्गी के माय रे चारिया रे चारियामे ——
उगतड़े —— हीरा नौ मण लूणी आवसी
गुरुदेव की आण रे मोडो जी अंग की आकरी
" " " हीरा दुधा जी धापा नूजला
पेड़ मोरा के माया रे मोरा मे चमके वीडल्या
मोडो जी —— — हीरा नम नाम ——
अंदर मेल सु धने नीची ना कलू ऐ हीरा मारी बांधु
साबु वाली पोट
रविया मोड़ा की लारा जाना मत —— ऐ हीरा रे
गुरु देव की आण हीरा अंदर मेल सूदस पडु
पड़ती पेरू सेल छोरी आद राजा के कारणे
आपू पीजाऊ तेल छोरी आई राजा के कारणे
गुरुदेव की आण छोरी गाला देती निकलू
—— मोडा — की लार हीरा लूरा गाती निकलारे
गुरु देव की आण माने वरबड़ो परणा लियो
गई जमारो हार परयो पाड़ा सरीरवा पातलो
सुवे से पट पार डाकी पड़ो ना भावे रवाट मे
दो दो धा के पेर वीकी डिया सरीरवी आगल्या
ओदल ओसी वेसी डाचे वाको धरूड़ा वेसो नाकसी
गुरु देव की आण ईका दांत पड़्या मुरव ——

मुड़ो फूटी पोल वाका दाँत पड़्या मुख ——

जाऊ भोज की लार हीरा गाला देती निकला

भोज गला को हार —— पड़ गयो —— रावजी

हीरा माने नहीं के बाई सा ना चाला —

हीरा तम्बोल ने घणा दन लिया आज तम्बोल करा

गा. धारा अमर कोई नर वोतोजादको जनम मारोजी

चाँदा के चन्द्रावल वाजी सूरज के संघारणी

अन्दर के घर बीजू राणी ब्रह्मा के घर ब्रह्माणी

उतरा रजान आगे हैं कीदा जदीरे जुग मे गाली

राम रावणने मोही लड़ाया वण झगड़ा सू नारी

सीता वन में रावणने छलगी छन में लंकाजाली

कोरव पाण्डवा ने माही लड़ाया विल भाणसू न्यारी

द्रौपदा वन पाण्डवा ने छलगी वाके धरा मूं नारी

माता तो मारी नानी ध —— मूलो भी जवानी

सात —— जोड अंदाता एक जोत ——

धार का धणी के —— लेऊ पीपल दे बाईबाजू

माला गर मे जाजो उदोजी साडू की जोल्या गाजो

साडू साडू की जोल्यां गाजो उदल नानेरा मे जाजो —

नानेरा में जाजो उदल देव काला के वाजो

देव काला के वाजो उदल दुनिया को वेर लीनो

दुनियांको वेर पे छोडो उदल जी राव का धणी मेंमारजो
रा — नो हुंडा हला हका जो उदाजीमायनेगोठा —
परण्यो मारो हीदं पालणे मूतो धावा —
पारवती वल शंकर नो छलगी शंकरनोजटाधारी
बड़ा बड़ा जोग्या ने छल जोऊ आसणगलजाऊसारा
सीगी रंग नो बन में छलगी दे चरगटकी आईओजी
माट वे जुगदेव नो छलगी शीश दान मेंलाई ओजी
उतरा रखान आगो कीदा जहीं ओगुन में जाणी
उगार गट परगट पाणु चाली चॅवरे वाजालाईओ
चॅवरे तो वाता लाई ठाकुर मोजेजी —
उतरा रखान आगो जो कीदा जदी रे जुग में —
किना के दाई पड़े तो संग में रमजो तीनलोगसन्यासि
बाल पना में बाली मोली चढ़ते आई ओजी
राजपुता के रावले पुजाई जदी ओ कुल में जाणी
खत्री वंश के खाड़े पुजाई वाकी तो वेल विदाई
खेड़ा मे खेड़ा मे वाजी चावण्डा गोता गोता मेंदिखाड़ी
मीला के घर आण पुजाई दे दास के घर आरी
नहीं परणी नहीं कुवारी लड़का जठा गल हारी
काली मुण्डी को एक न घोड़ो रह गई अकन कुवारी
घोड़ी बन मोजा ने छलगी गण मण मायाले लू

गण गण माया लेलु अंदाता राठौड़ वराजु जी
सात सामरा मू मी फरगी रास्यो न डूबो पायल
मौ नादिया को पानी पीगी पेर तरसाई रह गई
एक भारत भीयो रचायो वासू मूरवी आई
अतरा एजान आगे कीदा जदी सो जुग मेंजाणी
नागल वल नागा नो छलगी काजल्या भोंभर लाई
——— हाली छलती चाली छलती नो कोईनर गाली
अंतस ऐजाना आगे कीदा जदी मने जुग में जाणी
हीरा जरूर भोज के लार उदला माना ती
गा. गुरुदेव की आण हीरा वागा जावो बाई
वसा की गोंदल लाय, वसा दे मारा जी परण्या बींदनी.
भोजा करता भरतार वसा दे मारा जी परण्या बींदनी
गुरुदेव की आण टाको पड़ग्यो खोटा राव को
भोजा गला को हार जाउ, भोजा की लार डी
जाउतरा खेमाणा को ———
जरू भोजा वे, उदलणो पड़ी भोज वना ——
गुरुदेव की आण हीरा कागल सूं काली पडू
रूप देही को जाय छोरी बाबा हाथ की मूंदड़ी
खलकल लागी बाँय छोरी कूला सूँ फोरी पडू
गेला में आई नींद नजर सू देखवे रावत भोजने

जदी धापने खाऊ धान जदी भोज के जावसी
आज पद्द मगरा का मोर आज मीठा घणा बोल्या
घणाबोल्या दादर मोर — समन्दर हँस आज
को दियाड़ो घणो रूड़ो लागे ओ: हीर जी
है कैदन की कख्या रलिया भोज यो छटो महीनोजाय
जावो हीर समदरा जावो साढ़ा तीन से छोरा नेलेलार
छोरा नो लार ले हीरा गेले वी —
जा समद मे ऊबी गुरजा में समाचार केवे —
गा. गगना गुओ पवना मरवो समदर वासो लेय
हीरा डावड़ी थे नरवर सूदी परवानो देय
गु. सो. केवे | गगन गुओ पवना मरवा समंद वालो मैलेय
| लाख लोग मे — किण २ को परवानोदो
हीरा— आधी उड़ अदरा मन जाव आधी सिंध —
घणो मचेलो रण भारत जी मे उड़ उड़ मरदाका—
अधी उड़ अदरासन परी जाना आधी सि धमड़ी जता
यु माने नूते कई देवे हीरा रण भारत माचेला तो
आपस मे मरदा का गूर गला ——
हों उदल बाकी परा बाई सा के राण्ड छावे भोला के
माने कद परवानो दीजो, नरवर गढ़ पर थानो ——
परवानो गोठा मे मेलणो सोच मूठ क्यों करे

हीरा सोची मा वात कूण कह दीदी अणाने अठे —
के हीरा समदर सूं गेले वी पाछी हीरा के महल में आई
महला सू बाई सा नो हेलो पाड़ो के गुनाली गुरजान आवि
णा हीरा बाजार मूँ दान क्यो करला के कलस घोड़ी
पर वणी असवार साठा तीन से छोर मने लीदी लार
के रायनगर मे दान क्यो मत्सो कोई नो के मी
नागल पहाना का बाजार मे उठे लादा सो डोबा
अमल दार डोकरा १।८ अमल घोटवा को क सोट
छताकडी को घोटणो ए सेर को हुक्को—
बोल्या के कहे छोरी राम को नाम सो हीरा बोली मेला
मे चाला मे मेला मे वलयो —
आता ही डोडमणी की वात्या कीदी—
छ ताकड़ी रादी दाल — सब खागयो —
फाटा महल में ऊदा पड़ो
हीरा पूछे परवानो लेजा ओ, लख दीरु परवानो
हीरा तोड़ो नागर वेल को पान परवानो लिखवा लागी—
ओल्यु दोल्य लिखदू ओलबा, बचे लूख दु गर गड़वाई के
छै छै दन की करगया मो छटनो महीनो जाय धार
यो लख परवानो केल का पाना में बीड़ दीदो
बीड़ता ही मोटा बाके दीदो हाथ

के वा महीना खाण्ड सू तो गोटा मे जाना पाछा आजावोगा
गोठा राण के बारा कोस की छेटी बारा बरस तो वारनाल जा
तेरवे वरस आऊ तो ठीक नीतर दूगा — क्यो गेल दीजो
के आदिया शक्ति अंग के गुदो दे पसीनो उतारो
पसीना की रूप रेल पैदा कीदी गला के परवानो बाँध
रूपा रेल ने कनाक मेल सू पोड़ी —
गावतरी रूपा रेल बगड़ावता का रंग महला में
के चाँच सू काट परवानो नाक्यो —
अनावो परवानो सवाई भोजा का गोड़ा पर जातो पड़ो
के सवाई भोज अबे कई समाचार केवे।
नियोजी सवाई —
गा. छलाकड़ी को शीशा को धुण्या को खल क्यो मेला मू
आन बतीस गुन्डी बागा की का टूटी आस्यो और कई दुख
पड़यो आज, बार बार करू पूछना रे बगड़ावता परो
समालो गढ़ गड़ वाई को धाट वचन दीदो रे देवी चावण्डाने
हारयो कीजे हाथ
रा. रावत भोजाने
सरंगाउ सनेसा उत्तरया जाय उतरया जाकी लारा
आदि शक्ति अंग लगा लगावता चोबीस के मरवा कोबीड़ा
उतरो रे बाबाजी का सूरा —

फेर फेर नियाजी इण परवाना ने पाछो फेर दे
के नियाजी जोधा ने क्रोध आया
——— को हाथा लुवालो ——— ———
वड़ा रावकी ——— बाग जी का सूरा
के गोठा में नगारो लाजो, पड़ी नौवत पर ठौर
नौ चढ़ मत ——— कठे निकल्या गलती मों ———
करया राजा की चढ़गया जान बाग जी का सूरा
——— नगारो गोठा मे लागो ए भाबी नरवराली
पड़ी कणिया वाली ठौर ——
चढ़ मतवाला निकल्या गलती मा गई रात
जॉवा तॉवा वरणी रात
कसी राजा की नौकरी ना चढ़याना चढ़्या कस्याहो आईजोकी
राणी लावा बेड़ा राव कीए भवी भारी कनक मेलस
फूँदी लूटा लावा पड़ियार की वा जाला तली गणगोर उतार
गुरु देव की आण देवर मती पदारो राण में
मन मोहना की आण देवर परणो परणो कई करो
परणाऊ दोने चार देवर जगड़ाला की जाटणी
पिलोदे सरियार आड़ोला की आगल्या
परणो राज कुमार देवर ——— गट की गूजरी
" वेलो धरम धरा की गूगरया

गुरुदेव की आण देवर दो गोरी दो सावली
चावंड़ा को अवतार देवर दोगोरी दो सावली
चावंडा को अवतारगामी नान्यो भमर क्यों नाक मे
नाक सुवा की चोच " " " "
" " " पातली नाहरी ओढ़े लोवड़ी
चाले ढमकी चाल चाल गुजरा जीणो काड़े गूगटो
परणो राजाकुमार देवर मालोड़ी तो बेनाड़ी
पटलो राजाकुमार रे —— मारी बेनाड़ी
गुरुदेव की आण भावी परतो न परण्या गूजरा —
" " जाड़ा पगा की जाट
चैन परा की चार भावी आड़ोला आगल्या
गुरु देव की आण भावी गढ़ मथुरा की गूजरा
मादेव की आण भावी चन्द्रावत छोटी गूजरा
दो घूंघट की ओर वातो श्री कसन ——
गुरु देव की आण भावी गुण की तो काली —
रूप दबावे गाल भावी गुण की तो काली
रूप दबावे गाल —— पहला गूजरा —
अवे नियोजी कई गूजरा का बरवान केवे
गुरुदेव की आण भावी उदा को जरा आदेसा
छूटा लटूरया विकराल भावी सोला मैगे सोगरा

पीवे पातो छाछ में — हाथा में पीतल पेरणी
चूरले लपटे नील वाके पंचेरी का धावला
सवा सेर नाड़ा की डोर वाके " "
मन मादेव की आण भाबी भरी कचेड़ा निकले
" " " " ऊपर वाड़े साँचरे
मूड़ी आवे वरस वाकी भचली वासे लूगड़ा
" " खाटा जो वासे धावला
" " ऊपर वाड़े साँचरे
गुरुदेव की आण भाबी गोकल गढ़ की गूजरी
बतलाया गुरबया करे — परतल परणा गूजर
थां गूजरा का आस्या बरवाण —
कसी लारबोला बेड़ा की रली
ऊटा सारा — बोकड़ारो — केसर लारे मांग
बदनोर मारा — रे भाबी हर फर देखा —
देवर जी असी कसीक राणी लावोगा
देखा राणी को रूप मने बताओ
गा. गुरुदेव की आण भाबी भरते — सो दुलगियो
राठोड़ो की वोल भाबी — " " " "
राठोला की पाल भाबी वण सींचे — पोघड़ा
भूलगया भगवान भाबी वण सेचेतर दो घड़ी

भूल्यो भगवान भावी नहीं देवाल पूतली
नहीं नारा में नार भाली " " "
भूल्या फिरे भगवान भावी बिल सॉचे नर दो घड़ा
गुरुदेव की आण भावी गाध देवल को थंब बण्यो
पिण्डा बेलण होय भावी एड़ी तो सुपारी बनी
लाक वली तलवार देवी गुरजी गंगा रवल करी
गुरुदेव की आण राणी के गोड़ा में गुणेश
गोड़ा मे गुणेश देवी के कमर केल की कामड़ी
लट जोला रवाय टूटी तो अदरव बली
जावे गूल को फूल देवी की " "
पेट पीपल को पान देवी के दूद गुवा की लोथ है
गुरु देव की आण है छाती तो है सो डुले गियो
नारंगी अवतार की देवी के तो है सो डुले गियो
नारंगी अवतार बनी वात सोवे वाकेड़ा
मुग चमाला की डाल रानी के शीषतो उदरव वण्यो
नारेला ला अवतार देवी के दाँत दाड़म कर बीजाड़ा
गुरुदेव की देवी रे नोला के सरमो सारलो
कोया काली रेरव देवी के नोला जी सरमो सारणो
गुरुदेव की आण देवी के जीव कमल को पानड़ो
कोया काली रेरव देवी के चोटी गी ————

पियाला को नगर रे अगम को जोलो आवसी
पद्ध मने लल जापरे चोफेरा वाजे वायरा
टूक टूक हो जाय रे " " "
गुरुदेव की आण ऊबी सोवे रे ——
धने सूबो झपट लेजाय हँसती बोली ऐ रंग का ——
गुरु देव की आण देवी के चौय दपाल को गागरो
सालू साँगानेर देवी के मसराई की काँचली
कसना लाल गुलाल देवी मसराई की काँचली
ओंडार के झणकार वातो कनक मेल सू उतरे -
" " —— बोली ए राजा राम की
गुरुदेव की आण भावी चौथी पाति थे मेलो
दोई नेल ललाड़ भावी " " " "
गुरुदेव की आण राणी सीप भरके पानी पीर
" राणी बोल्या पानी में डीमसी
" धणी की खोपड़ी में पानी पीवली
चोथो दाणो चावल खाजावे तो फाट न नर जावे
असी परण लावो ऐ भावी राणी
मती पदारो राल में राल ब्यारों देश
गा. गुरुदेव की आण देवर घरा गंगाघाट को गोमती
नाडे नाकुलघजाय देवर घरा अम्बेर गर आमती

पर घर फूकन जाय —— घर देवर बासी पड़या
पर घर पोढ़न जाय लाड़ला घर ढोल्या घर सीरखा
पर घर बैठन जाय लाड़ला घर ओटा पर ओटड़ा
पर घर बैठण जाय —— परनारी मीठी छुरी
पाँच ठोक मे खाय " "
टुक मरदा का जाय लाड़ला परनारी के कारणे
पत पंचा में जाय लाड़ला परनारी मीठी छुरी
गुरुदेव की आण मरदा पे नारी के कारणे
दीई तेल जाबाज मरदा धन घटे जोबन घटे
हक मरदा का जाय रे परनारी के रमे
वही लसन को खालरे परनारी को भोगणो
खूणो में बैठनो साय देवर बाया आवे बासना।
गुरुदेव की आण देवर पास पंचामें आय मतीरारो —
राल ठगा को देश मति पदारो राल देश
" कामल गालो देश "
राल कांगरु देश ठाकर मती पधारो राणा मे
गा. गुरुदेव की आण आनी आवो गोठाको गुजरा —
गानो मंगलाचार " "
" रे खाली लो जावे राल मे
चढ़ मतवाली ——

गुरु देव की आण —— आवो गढ़ा की गुजारा
केऊ दल की बात रे नाड़ा में केसर घोल दो
—— लाल गुलाल रे नाड़ा में केसर घोलदो
केऊ दलड़ा की बात अरमी आवो गढ़ा की गुजारा
खाल्या होल्या पाग रे केसरियो मोजो बण्यो
केसरियो सबा साथ मरदा " " "
नकराला की लार मरदा कुल जोधा जाने में
मरवा मोजा की लार मरदा कुल चढ़ग्या फौज में
चढ़ मतवाला निकल्या ओ अन्नदाता ढलती मोंजदी रात
गुरुदेव की आण रे काकर पर फूटो केवड़ो
मंगरे बोल्या मोर सपणी बोली जामी का बील में
समद कुरल्या हँस रे कुड़ल्या में सारस बोलया
खोत वेग्या सूण रे कूड़ा में कबूतर बोलियो
गुरु देव की आण मरदा सोनो ले सोनी मल्या
मलगी राड़ी राड " "
" परदा तेल ले तेली मल्यो
मलग्या वासग नाग मरदा बिना तिलक जोशी मल्यो
खोटी वेग्या सूल मरदा डाँवा तीतर बोलया
बांया बोल्या सियास रे "
खोटा वेग्या सूल रे घोड़ा ने पाछा फेर दो

गुरुदेव की आण रे मरदा मती पदारो रात में
थाकी बालक बैरा कपरा रात गियानी बावड़ो
वरजा मानो रे चेला रे नाथ का है ——
वरजा बड़ भाग का सूरा माने काई नहीं
लख परवानो रूपनाथ का चेला वरजा के हाथ्या
हूबे तो डूब जावे ——
लख वे लख परवाना मोकलू रूपनाथ जी लिखियाहीजो बाँच
चेला जावे थाके रात में जाजो —— मेलीजो समझाय
लखवे लख परवाना घणा मोकल्या चेला मारा लखियाविदावाँच
चेला मारा रात में जावो तो चली जावैजो राखज्यो मोबल्यी
पंचा की टेक —
लखदू बजरंग लंगोटा ने लगदू ऊपर कड़िया
जावो तो चली जावजो गढ़ नेगड़ोन —— टूकड़ी बलबल
धरती पड़या
ओल्यू दोल्यू लखदू ओलवा लखदू लाल मरणी
जावो तो भली जावजो पण मोठा में रोवेकी गवावालियँड
गुरुदेव की आण मरदा मोज पता —— बीजली
तेज भवर कलियाण मरदा बा राव के बोरड़ी
रबड़ रमता हाँस मरदा निम्बा राव के नोलखो
वरजा मानो चेला नाथ का घोड़ा ने पाछो फेर दो

साढ़ा पर लगासो सोंड़ा पर दीवड़ा धूकती जावे और
बगड़ावत का घोड़ा एकी बेकी खेलता जावे
काला गोरा उदा आकास पर नगारो बाजता जावे
जो बंगला हाथी पर शंकर की सेवा गारही
चढ़ मत बाला चला जारिया मीला मीना —
थाली बजावता बगड़ावत के लार चढ़ा दिया
घोड़ी एकी बेकी खेलता व घोड़ा पर घोड़ा कूदता —
माथे गालरिया टोप सवा सवा लाख की हीर कणीनपरही
बणा —— मूछा का उमराव छड़ी दाड़ी का बकेल
—— बचे बचे घोड़ी की गरवाल उड़ती जावे
के नियोजी घोड़ो डबटायो जो कनक मेता दाबियो
बार २ कर पूछना भाबी देवर नियाको मजारो लीनसाधा
एड़ी मलक पीड़ी मलकी मलक्या बतीसी बणी दाँत
भाबी मारी को मनरो लीजे देवर नकराला — मूसाजा
घोड़ा नो उतार जो चोड़ा छापर के माँय
लरत परवानो राणी मोकल्यो नोलखाँ बाग में डेरा दीजोअजा
के घोड़ा ने —— पेरया दुर्गा माली बजड़ उड़या कमाड़वाला
जाड़िया बीजू सार —
ग्यार माली कोंदा ले रावजी का मेरू गढ़ में —
जा बेटा के घोड़ो लाला ही दुर्गा माली ने कही कहे वे

साढा पर लगासो सांड़ा पर दीवड़ा धूंकती जावे ओर
बगड़ावत का घोड़ा एकी बेकी खेलता जावे
कालो गोरो ऊदा आकास पर नगारो बाजता जावे
जो बंगला हाथी पर शंकर की सेवा गारही
चढ़ मत वाला चला जारिया मीला मीना —
थाली बजावता बगड़ावत के लार चढ़ा दिया
घोड़ी एकी बेकी खेलता व घोड़ा पर घोड़ा कूदता —
माथे गालरिया टोप सवा सवा लाख की हीर कणीनपरही
वणा — मूछा का उमराव छड़ी दाढ़ी का बकेल
— वचे वचे घोड़ी की गरवाल उड़ती जावे
के नियोजी घोड़ो डबटायो जो कनाक मेला ढाबियो
बार २ करू पूछना भाबी देवर नियाको मजारो लीनसाधा
एड़ी मलक पीड़ी मलकी मलवया बतीसी बणी दांत
भाबी मारी को मनरो लीजे देवर नाकराला — मूंसाज
घोड़ा नो उतार जो चोड़ा छापर के मांय
लरत परवानो राणी मोकल्यो नोलखा बाग में डेरा दीजोआज
के घोड़ा नो — फेरया दुर्गा माली वजड उडया कमाड़वाला
जड़िया बीजू सार —
ग्यार माली कांदा ले रावजी का मेरू गढ़ मे —
जा बेटो के घोड़ो नाला ही दुर्गा माली नो कही कहे वे

आगल वागल परी खोल दे दुर्गा पराखोलदे बंगड़ कमाड़
एक आया गोठाराला उमराव नौलखो वतारे — ग
आगल भागल नी खुलेन खुल जड़्या बनड़ कुवांड़
वाला जड़्या बिमु सरका जीकी कूंचा लेगा राजाराव ग.
बारी करा पूछना रे माली दुर्गा.पड़ा खोलदे बगड़गड़मा कवाड़
बारे ऊबा गढ़ गोठा का भोमिया आयारे — नेलखा लाग
प्यारा माली कोंदा मेल कीदा अस्यो मार —
जो घोड़ा मूंदी दूगा लात तले नाक
बागल्या का छोरा बारा वरस गाया चराई जुता —
आगल भागल खोल दे मालन एक गोठा का उमराव —
निकल बारे आई मालण की डावड़ी मोरद्या गत
मालण की डावड़ी एक फूल काना में चौबीस मायाकेलागदे
के वा टागला लागी —
ले चौबीस माया एक एक मुठी मोराकी नाकिजो टोपलामें गयो
एक सेवरो — लाखलत मोजने पहरादे
सेवरो खलत भोजाने पेराई सवा लाख की —
मालना का टोपला में नाक दीदी
एक में परो गूंथ जोड़ी खली का — नाकरे
सेवरो घोड़ी का डाला में नाख्यो नो करोड़ को हार खोल
खली का टोपला में नाक दीदा —

अबै मालण खोलदे बनड़ कमाड़

किवाड़ निरखले खिड़की से होवतो —— दरवाजो खोलदेना

मालण गैले वी माली नाल्यो —

टोपलो बाल नाकी आणी खीरा ने नाकना माली कोंदा फेग्या

टोपला सूदी मालण नीची पड़गी ——

निपछी ने लागी रीस घोड़ा तो लरवाया ——

नौसो हाथ को कोट कूद घोड़ो जातो पड़ो

के दूणो छावको दुर्गा माली के — के दुर्गा माली

—— पाग चौड़ा छापर में जारियो के जै —

ने पायो दारु वेड़ो कर छोड़ो —

हाथी दरवाजा का किवाड़ तोड़ता ही बाग में ——

मे लेगया —

चौबीस भाया का घोड़ा पाचे खूदता जारिया

चौबीस भाई डेरा नौलखा बाग में डेरा देदी

खखड़ा के बाद दीदा छवे कोई नो

बगाड़ावता मनो कीदो डेरा जो बाग में लगाया

दीवड़ा धकती सोड़ासी

गौंद मरजा बाग मे ——

अबै हीरा आईया थाली के नाता होवे —

गा. भँवर भोज का डेरा बाग में किल विधि सजो गावाजी
दही की मटकिया लेता हाथ में गुजरी बण कर जावाजी
रंग रसिया ने दहिड़ो पावा रिझान मोरा लावजी
अण विध सजरे चाला मारा हरिजी उण वध सतरे —
धोबण बण कर चाला मारा हरिजी हाथ मोगरी लेलाजी
रंग रसिया का कपड़ा धोवा —— मोरा लावा जी
सुई कतरनी लेवा हाथ में दरजन बण कर जावाजी
रंग रसिया रा कपड़ा सीवा रिझान मोरा लावाजी
अंतर शीशी लेवा हाथ में गांधल बण कर चालाजी
रंग रसियाने अंतर पहरावा रिझारी मोरा लावाजी —
भँवर भोज का डेरा
आच्छी पनिया हाथ मे मोचण बनकर चाला जी
रंग रसियाने पनिया पेरावा रिझान मोरा लावाजी
पान बीड़ी तम्बोल वण जावां रंग
दारू की बोतल सू कलाली रंगरा —— पड़गा
पेट में दुखावा लागी न के रावजी के —— खदायो के
आया सवाई भोज का भोपा —
सालो सालो भील काड़े रेबारी को मान के ओलरवाडू
सालो सालो भील रागी बोली उठे कारीन लागो
असल —— नौ मुरवा सूरता राणी पर उबारे तो ठीक

नीतर मरजावे ती जी को केस खाडो नी होवे अकवीस वक्त
उवारे तो जीवती रहे
माती गाल खाक मे पाग रावजी ने ——— को
आपकी ——— अंराता एक धोलो सुअर करवड़ा पाड़र
फैरदिया —
रावजी मन मे कीदो विचार आज बाग मे सूर आगियो के
रावजी १५ बतीसा उमराव ने हेलो पाड़ो
रावजी ——— नौ - बाग मे फौज चढ़ गया सरावीसकार
नोलखा बाग के चारी मेर घोड़ा पर घोड़ा वेठीयो
जीका मूड़ा आगू सूर भागे जीको पटो ——— हो जावे
के रानी कीदो मन मे विचार किका मूड़ा आगू सूरा ———
जीको ——— खाल सो करावा —
रावजी का हाथी का चारी पंगा नीचे वे सूर भागे
नो तूबा ——— दोड़ही झाला का वार मे
लेवे तो ——— ——— ———
राणी रथ वेत्या सरगा ——— मेला मूँ उतरे
कई ठुकराली नीयो रथड़ा के आड़ो जा करे
हीरा ए हीरा मारा भावीसा नि कठे तिजारही
कोई वे ये बीलोटा की कमारया पड़दा मे रवाताली
नीमो नाल ठारा नो कई कवेकह वे ———

गा. — गोला तपाडू कराडू धीजा ऊपर धीज
ताता धम्मासू — गरा थू गोला ले हाथ ऊपरे मेल
सुन — कई कहवे बासु गोला तपा हाथपर मेली
जावो ही — सोंच के ऊपरे जीवा ऊपड लेले —
हीरा कहवे धर्मणिया धमाड़े गोला — करदू
सांस के परवानो ओ जीमजी अला गोला ने लेतू मेल
के धमणिया धमावता पाँवा लागा
पकड़ २ संडासी हीरा की जी भवर मेल वाला —
मेलता ही हीरा नगल जावे —
निगलो पाछो पर गयो
नीमो पाछो मेला दारवल वेगियो — चलो गयो
जाना राणा नगर की बावड़िया सवा लारव को गोंगर
बावड़ी में नाक दीसे देरवो रे नरवर वाला मो गोंगर
काड़ो तो चालू थारी लार — छोटो नेन जी
जो शंकर की सेवा कर रियो शंकर ने आराध्यो
के जांजर पीपली का पाना जू पानी पर जांजर गरवाल
डाळ
नीयोजी लेतो माला की आणी जांजर —
देवर जी पटरा दो अणी पग में मू कई करू
के नीतरता वागा मूं राणी ने ते गेले वेगिया
आगे सगाया को गवाला गाया चरारिया परेडा

रावजी ने कह दई के मों जाली देखवी।—
लाडू काड दे दीदा — .के गुवाला खाता ही आरव्या: चकराई
फेर गुलाल कई कहवे —
सारा लाडू सदा खादा कस्या खादा आनू
—— डाकी जो —— जाओ पूछं
चंवरा चोपरा —— बेठो —— मरोड़ी मूंछ
साजाकी ——
गाया को गुवाल मर गयो राणी को रथड़ो ——
—— याद आयो के रथड़ा ने उचाटाम्यो देख
बाकी सुणो देवर नियो कोऊ दलड़ा की बात
के रथड़ा नो ढ़ाबता ही देवर नियाने बलायो
गा. आल्या भूली आरसी खूटा भूली नोसट हार
काजल की डाबी मेंदी भूली पनवाड़ा भूली पनिया
तीना वस्ता जाद लावो जद चालू थारी लार
सुणा भाबी सात कोस पर आगया अबे पाछी नी जाऊं
भाभी पाछी जावा लागी नियो बोला पाछा आवो मैं लाबूं
के नियो जोधा का घोड़ा पर असवार ले कनक मेंता पर
राणी सा का पवन डोलर में हीदवा लागग्यो
राणी एक देही सू वगड़ावतान के दूजी सू पाछी गी
लिया अठे बेगू में कई हीदे परो चाल वगड़ावतान के

पाद्दा दौई देवर भोजाई चोड़ा द्वापर में आण उतरा

गा. —— तो पड़ियारा की बैत्या चौवाणा का

डोलो राजा राणा को डोलो ब्रह्मणी को

हीरा मारी डूगरी ऊपरे जो डूँगरी

डूँगरी उपरे —— उदालो कीदो ऐ रावत भोज सू

हीरा मारी करम कलेवा जो छोड़ग्या हीरा ——

हीरा मारी टावी पड़ग्यो खोटा राव सू

छोरी मारी कद को मॉगो मौ मैं बैर ओ दासी छोरी

हीरा मारी ~~कद को मॉगो~~ लपटी ऐ गागर वेलड़ी

हीरा मारी नरा के लपटी नार ओ माया मारी दासी छोरी

भँवर भोजा कीरी जेठ तेजाजी री देवर निवाजी वणी बोलास

रावत भोज की ——

छोरी मारी आ —— चमकी ही बीजली

भोजो जी चमक्यो ऐ नवली रा ओ दासी छोरी

हौं हौं ऐ माया ऐ मारी हौं नारवल्या री मेंहदी राचली

हौं हौं —— कलाल हौं हौं —— सरमा

उदालो कीदो ऐ रजिया भोज सू

हीरा मारी डूड़ा रो माडणा जो केवड़ो ——

छोरी मेला री माडणा नार आ ओ दासी छोर

माया उदाला —

हीरा मारी —— जो बागा में केवड़ो

मूं तो बन्दी बचली भाड़ो माया सारी —— भँवर मोड़ा जी
री
जेठ तेजोजी री देवर नियाजी री —— बोलार
—— मोड़ा की मूँ संबधा माडूली
हीरा मारी मोडो जी ——
तो जाता ही तका राजा देवर रथड़ा ने ढाब दीदो —
देखवा फेर बगड़ावत राणी ने राता देवरा में गोठ — में परा
सुया
घोड़ा का परवा दार घास काटवा जारियो राणा
सोमनाथ मन में विचार कीदो असी लुगाया आपणे
होवे तो ठीक रहवे, तो देखवा राणी सा सुणलीदो —
राणी बोली मूँ परी परी चालू थाके —
पेमा कह्यो थे परा चालो तो थारा सरीरवा एकुनी
मारो हता मे जीव घणो थारे हालो है के नाहीं
घासी ने था घर में रवालीयो नाहीं घणो हलाको प्रमाण
गा. आठ आना में घड़ावा दीतली फूलाकीए सौ नपचास
मजूरी पेली करला राणी राजा की दान की ——
खाता जो रवावा दूजी गोठा में देवा —— राणी रहता
की
राणी बोली मूं थाके ही चालू और कई है सो मारे होजावे
घणो पेमा के दीजो, रबड़ी, छाली बूर के बाकरो घणो
देजाको
दूध काड़ा खावा जो खावा राणी दूजी गोठा मे देवा
बपराय

साठ बरस की साल की कुरसी बसी राणी

जीमें डोरा सागला बरायां पाकाराल

अनोखा दन काड़ा, गोदड़ी ओढ़न काड़ा साल राणी

धर्म गाया थाने न मल्या न मल्यो गाठा दाम

जीनु रड़वो करज्यो मारो कीड़े राम

धर्म गाया धणी मली धणो मल्या दाम

गणो दोड़ोयो बैकुंठ में धणो दीदो राम लक्ष्मण के काम

आज भगवाना दो राण्डा मेजी

अबे तो थारा सुदी आरियो वन में मिलसी वळा मसकार
माय

सारा पड़ग्या कण कण का बेग्या काद‌ड़ा

धूला में मलगी आपी ढुल ग्योसियड़ी को पाणी

थारी केला रमोटो चावण्डा कदी न करू मारी रोल

मां थनेन जाणी देवी चावड़ा जीसू कीदी रोल

अब — जीवतो छोड़दे राणी राजा की आे

पतो ग्यो थारा कारता चौबीस माया की

बुझो सून्न रकण को घाघरो सा लू सांगानेरका

पंचरोत्या की कांचली कसना लाल गुलाल

दौरा जेठाण्या को झूमको मरी माती ड़ा कीधाल

गाती बजाती सब मेला उतरी आई राजा देवरा

नम नम लागी चावड़ा के पांन

साहू गूजरी देवी के पगा नी लागी
करड़े रवादे ऊबी गूजरी कस्या पुरुष की नार
मू " " " सवाई भोज की नार
सब बधा गाती बजाती महला में लगाई
मेला में लेजा बदाल दीदी, निया़डी छ: मीना की मोड़ले तेजड़े—
अबे तो सूर लोगम गियो वठीने रावजी की फौजा मेला में
वाद्दीजी
जा —— रावजी मेल सात ——
कनक महल काला कापड़ा का पड़ी मेताकी छाप
रानी सोलंगी बैकुंठ उतार ले नियो बाल जला में पांव
के रावजी राणी का महला मेंजया, मेला में देरवजा ऊबा रहू
बचारके
के साल तो सांवर मेल — दौवड़ धकतो मेतजी तेल
थाराली राणी खोटी वचारी देगी बुढ़ापा में सेल
रावजी महल सू नीचा उतरया
हुक्मी चन्द सेठ ने समाचार केवे
वार २ करू पूछना केठ पेरव्या राणी सोलंकी कारवोज
हुक्मीचन्द केवे —
काला बना का कागला कालो है पड़राव
बांया रलकारा, बोल गागड़ता गड़ो पाछो मार
दन उगा ही वीने दारवल कीदी गढ़ वैराट
~~बांया रलकारा बोल गगड़ता गड़ो पाछो मार~~

फौज मेली कर रावजी बगड़ावत सूँ लड़वा निकले
गा. गुरुदेव की आण थारी नुपजी जैसलमेर की
भीलवाड़ा का भील मरदा गढ देवल देवड़ा
" " " चितौड़ गढ का चीतला
गुरु देव की आण मरदा मोवतका ——
कालू मियो सनवाड़ कालू चढ़ने वेगो आवजे
मा भारत के माय कालू चढ़ने वेगो आवजे
गुरु देव की आण कालू के ढाल डडे बेडी फरे
गोला गावे गीत कालू के बरछी भोंगो बुफाड़ा
तरा —— तरवार कालू के छुरिया चमकती बीजली
गुरुदेव की आण कालू के लख छड़ी बादी पड़ी
पड़े —— ढौर घोतो —— कालू यो निकल यो
आवे —— कालू निकलयो
साडीड़ा खोडे पलाण साँसरी आदी दीजे —— भाई
बाच परवाणो वेगा आवजो राणी कमला वलोकामाई
साड़ीड़ा साड़ पलाड़ा सासरी आदो दीजे ——
" " आदी —— धूलवापर वेगा ——
" " ——
" " नीली डोर —— चतलोरी कामोर
" " आधी —— वचला वकेल

साड़ीड़ा लाड़ पलाड़ा नागली सूरी पठाण, सूरया वर वेजा असवार
वीरा केरई चारी खूट
साड़ी वाल के नाम —— दे लौंड़ के ऐड आगा रमायो
के रावजी की तेरा तुमाल के फोज —— वीरावजी —— टुकराल नीम्रा ने
कई समाचार कहवे —
अन्दर केडे यू चढ़ जाजे नीमा फूल गोरवड़े दीडो हाथ
फौजा कतरी मेली वी —— नीमजी नाल माणक चौक के माय
केदा कडेड़े चढ़ गया दीदो मेरु गोरवड़े हाथ
तो तुबा —— फोज ——
रावजी की फौजा —— दरावटा में
मावेता ही नियाजी के नेगड़ो फौजगी —
माला सू मालो —— बासू तो वा बन्दूक सू बन्दूक अड़ादी
फेर कई नियोजी —— पहुंच जावे
बार बार करू पूछना नियाजी सू सूते वेनो जागा
रावजी की फौज तो गढ़ में गई —— तो खापरा नियाजी
जीका सूरा
नियोजी को नती सूतो —— गूजरी माता घटियाली ने समाचार केवे
बार बार करू सासू पूछना —— बेटा डाल बोल
—— सूता ना जागे चारा पूतड़ा माने लेजावेला मेलासू उतार
साता —— सूरज सामी करला कीदी बोनासू दूध की मेड़ा छूटी
माता का थम्म सू —— नीरजी म्हारो थान वेड़े कोई ने होबंकाऊ
गूजरी —
फेर नियाजी ने गूजरी केवे —

ए कई सूतो —— नींद गराड़ी थारा कुवाड़ा पर वेगे पड़िया म की
गूजरी
फेर नियोजी बोले, करड़ी बोली गेहा की गूजरी बोलगी हला बोल
भर हाथा की बाथ फेकदू ले जाना —— की पोल
के नियारे रीस आतता ही जोधो नियो बैठा नियोकर ——
रावजी की फौज तीन कोस पाछी सरक गई ——
खावन्द मारा सूतो जाग जा गढ़ ने गढ़ा को कोकरयो र कदे ला
उमान
असा बोल मत दीजो मत बोलजे कड़वा बोल
ले खड्ग बीजल्यो रावजी की फौज में पड़ जाऊ माता लेलू
तोड़
माता लेऊ तोड़ जदी नियो कीने मारो नाम ——
रावजी की फौज पाछी फरी गढ़ रायला की दीप कँवर बाई
भोजकी
बेटी ने उठाले चाला —— सारे ही नियो
फौज गढ़ रायला के लग्गी
दीप कँवर बोली जावो खावंद मारा रण भारत में लड़ना
हुगाई थारो बाप लायो मूं लड़वा क्यों जाऊ
के दीप कीदो आदमी को सरपाव काका —— पेरा कपड़ा ——
कालिपा पेंचरिया वी ——
के काका —— बिजल्यो खाण्डो हाथ में के घोड़ा ने ——
रावजी की फौज ने काटवा लागी —— उणी न टेवी
घोड़ा का दोई पग हाथ के कोड़ खटकाया
के रावजी बोल्या धन धन दीपाबाई हाथी के कोडे
आन खटकाई

कोई जाणे आदमी कोई जाणे लुगाई
और खेड़े आदमी गढ़ रायला में लुगाई
धन धन दीप कुंवर बाई—भोजाजी ने दोई पागड़ी
दीप कँवर घोड़ानि गोटा में लाई — बदल-झाई
उने लेजोजी सुणता ही आगा नागवाड़ा का डूंगरा गया
कीदा भगवा भैरव
काना में पेर डोरमा ने धूली — फरला फरेला —
के जोधो जगमाल छ महीना का बाल क्या —
माता माकी — करे पड़ा
घोड़ा कूकर लेला घोड़े असवार कूकर मूंभेलारण
गाढो दावा से लड़ो — घोड़ा की माल भारत के माथ
— रावजी की फौज में बड़ जावो देखो मौका दो हाथ
जोधो जगमल असवार वे गया खवारी के — खेत
भारत करवा लागा तो सूरमा रला धपाई
नौ लाख जोधे जगमाल मारया —
जगमाल को घोड़ो मरग्यो एक हाथ में से एक हाथ मूलो क्या
माता भर मोतीड़ा थाल आरती उतार ले जगमाल की, आरती उतार आरियो
के नियो जी वियो नीलखा पर असवार मायने लीदा
रूपा नाथ री रूपा — में गया
बार २ करा पूछना रूप नाथ भगवान — लेखाण्डो — रावजी की फौज में

भभूत को —— ले जावजे —— रावजी की फौज में आज
नीमाजी —— भाण्ड सुरम्पा रतन सूं घपाई आज
छ महिना को भारत सूमनियो —— लीदा है तोड़
नेनियोजी को मायो देवी चॉवड़ा में दे दीदो
नियाजी घोड़ा दूवता रंग महल में चला आवे
बार २ करू पूछना आरती कराओ गढ़ नागंडा की पोल
चार पग म्हारा टूट पड़ जावे तोई आरती ना कराऊ गढ़ नगंडा की पोल
सूती बेतो जागजो नियाकी आरती लीजो उतार
—— मोतीड़ा थाल भर गढ़ा की गूजरी आई पोट आज
देखे गुजरी देखे नियोजी के मायो नहीं छाती में, तलक कीदो माथा में
फूल उगाइयो —— में आँख —— की
नीमो जी पाछो गयो मना शीश छः महिना को भारत फेर कीदो
केमड़ तेईस भाई घोड़ा पर किया असवार
के रण —— माचवा लागो रवारी के टावे भारत
छः महीना को भारत बगड़ावता पूरो कीदो
देवी चॉवड़ा खप्पर खाण्डो ले उतरी
उतरी धर बदनोरा सूं आज
खप्पर खाँडो ले बगड़ावता की फौज में गया जाऊ
—— तोडू आज ——
भाट चौबीसा का माथा कार रूण्ड माला पेरी है आज

झड़ते का माथा —— राठेड़ वराजी पर बदनोरा के टाल

गण २ माथा तोड़ बैठी बदनोरा के टाल

के नियाजी की बहु —— गुजरी न सत चढ़ियो

लीदी कटार हाथ मे के लड़वाणी नियोजी

—— जाय बंगलो हाथी अठीने एक उठीने जा बीच

समालजे —— बगला हाथी की लोथ

डूरा सूइरी रीजे गट — की गुजरी मत —— पड़े आव

मोरे छोत —— लागे —— थारे पेले छ महीना

की है सो रूपनाथ ने पाछो आवजे —

वार २ करू प्रछना रूपनाथ थारी —— नेलीजे समाल

कोपन कटार — छ:महीना — मैंग की कूड़ी मे मेला दीसे

के पाछी निकड़ी अरथी —— नियाजी लोथ मेल ——

उने पाछे छोरा छोरी हो —

गईजी माडला गढ़ गया भूणोजी ने —— घोड़ी सवार को ——

जाय —— हाथी पीलोदा का कमार लेगया लेगयो

ठाकर काका पूरारे कबल पालरो

फूला में जन्मो कन्हैयालाल रनाडू झोल्या के लियो

छोरा मारी माग फाटी एरदनड़ो उगीयो

—— उजियो मेली गेरी बागा

गोठा में ओ देव जनमियो रे

छोरया गावो बजावो रे ठाठा की गुजरिया से

छोरया मारी ———————

छोरया मेला वाजी रज ————— गावो बजावो रे

गढ़ की गुजरिया ——————————

छोरया मारी गावो बजावो गढ़ा की गुजरिया है

" " " ————————

ठाकुर सुणी राण्या रे ठोले ओमकी

ठोसा काटूरा ओ चारो साल गोठमें देव जन्मो।

छोरया मारी गेरा बजारे गेरा ढोल

गोठा में नगारो लागियो ——————

छोरया मारी भरलो मोतिड़ा गज था ——— कापैरोधायल

छोरया करलो सोला सणगार सूता जोशी ने हेलो पाड़यो

छोरया मारी जोशी सूतो हेवे तो परो जागजे गोठा जनमो ——

——————

छोरया देव नारायण वाको नाम करसा उदल वाको नाम

देव धर्म वाजे पामणो, ठाकर कुणी घड़लावे —— थारे

कुणी वणलावे रेशम डोर ——— कसन हीदे पालणो

छोरया खातीड़ो घड़लावे कसन के पालणो नामोजी मेलेरे

रेशम-डोर

देव ——— हींदें पालणो

कसन खातण ने ओढ़ावो वाला चूंदड़ी

—— नो बँधावो बँधावो पचरंग पाग नारायण हीदे पालणो
ठाकुर गाया वजाय ओ गंगाजी नाईया ठाकुर सुणिया
जाराओ पड़ग्या पौन नारायण हीदे ——
छो. देव पदारया ऐ दशा बावड़ी गावो बजाओ मंगलाचार
वदावा गवावो पृथ्वीनाथ का—
—— केसर —— नारको या तो साडू गूजर
करे थारे आरती धणी रवमा ओ नारायण हीदे पालणो
ठाकर अनणा चनणा री थारे आरती दविले नानणवलकीयार
पुजारा करे ओ थारी आरती —— मारी ओ दनड़ो डूगियो-
पुजारा गावे ओ मंगलाचार नारायण हींदे पालणो
माग पारी ओ दनड़ो डूगियो पुजारा गाले ओ गुलाल धूप
मालुम करजो ठाकर आरती—
ठाकर वस्ती —— भलो राख जे राखो पुजारा वाली ओ गेडी टेक
खारी का मोम्या ओ थारी आरती भदेरया भेरू जी थारी आरती
माला सारी ओ थारी आरती —— वदनोरी चावण्डा थारी आरती
खेमाणा श्याम थारी आरती कला श्री काल का थारी आरती
डोगड़ा का धणी थारी आरती भूलया चूकया ओ थारी आरती
तैतीस करोड़ देवा थारी आरती—
कासी का वासी ने बाराई पुजारा बोलो आरती—
छोरया मारी घर 2 धूज्या है —— का
घर घर धूजी रए नवली- राण / गोप